

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25

जनवरी - II - 2023



अंक - 20

माउण्ट आबू

Rs.-12

राष्ट्रीय सम्मेलन : ओम शांति रिट्रीट सेंटर में 'दया और करुणा के माध्यम से विश्व परिवर्तन के लिए न्यायविदों की भूमिका' त्रिदिवसीय कार्यक्रम

एक चिंतनशील व्यक्ति ही बन सकता है दयावान : जस्टिस मिश्रा



कार्यक्रम में

जस्टिस मिश्रा ने बच्चों के साथ क्रिसमस के काटा

दिल्ली से स्वरांजलि ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया

इस अवसर पर बच्चों ने नृत्य एवं नाट्य मंचन द्वारा सभी का मनोरंजन किया

आध्यात्मिक शक्ति से न्याय में पारदर्शिता

ब्रह्माकुमारीज के अति. महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि परमात्मा सबसे बड़ा न्यायाधीश है। लेकिन साथ में दया और करुणा का सागर भी है। आध्यात्मिक शक्ति से ही न्याय में पारदर्शिता आ सकती है। समाज में अच्छाई और बुराई दोनों हैं। इसलिए दया, करुणा की न्याय में महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक सशक्तिकरण से

ही दया और करुणा के भाव जागृत होते हैं। ज्यूरिस्ट विंग की उपाध्यक्ष ब्र.कु. पुष्पा बहन ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य न्यायिक प्रक्रिया को आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा और भी सरल बनाना है। एक स्वच्छ और शक्तिशाली मन ही चीजों को अच्छी तरह समझ सकता है। ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टिसनर्स के अध्यक्ष संदीप अग्रवाल, व दिल्ली से सीनियर एडवोकेट मुकेश आहूजा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

न्यायविदों का मूल्यनिष्ठ होना बहुत जरूरी

लॉ कॉलेज झालावाड़ के पूर्व प्राचार्य बाबूलाल यादव ने कहा कि आध्यात्मिकता के बगैर विश्व परिवर्तन संभव नहीं है। कानून बनाने से समस्याएं हल नहीं हो सकती। न्यायिक क्षेत्र में परिवर्तन के लिए न्यायविदों का मूल्यनिष्ठ होना जरूरी है। न्यायविद प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. लता बहन ने विंग के द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, भरतपुर से ब्र.कु. प्रवीणा बहन, दिल्ली से सेशन जज राजीव मेहरा, हिमांशु रमन सहित अनेक न्यायविदों ने भाग लिया।

आध्यात्मिक चिंतन से ही बौद्धिक चेतना की जागृति

'विधि व्यवसाय में मूल्यों का सामवेश' विषय पर सम्बोधित करते हुए उत्तराखंड, उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश



सर्वेश गुप्ता ने कहा कि मूल्य केवल कहने मात्र से नहीं बल्कि चिंतन से जागृत होते हैं। इसके लिए लम्बे समय तक सत्संग की आवश्यकता है। भौतिकवादी सोच के कारण बुद्धि आज जड़ हो गई है। आध्यात्मिक चिंतन ही बुद्धि की चेतना को जगा सकता है। वास्तव में दुःख और सुख मानव के अपने कर्मों पर निर्भर हैं। जस्टिस गुप्ता ने कहा कि कानून का असली कार्य सुधारवादी होना चाहिए न कि मात्र सजा देना। दया और करुणा का भाव तभी आता है, जब हम ईश्वर से जुड़ते हैं, श्रेष्ठ राह पर चलते हैं। चिंतन ही मनुष्य को बनाता और विगाड़ता है।



ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। भारतीय संविधान दया और करुणा का बहुत सुंदर समन्वय है। जो दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं है। उक्त विचार देश के पूर्व मुख्य न्यायाधीश माननीय दीपक मिश्रा ने ओम शांति रिट्रीट सेंटर में न्यायविदों के लिए आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये। 'दया और करुणा के माध्यम से न्यायविदों की भूमिका' विषय पर जस्टिस मिश्रा ने कहा कि ओम शांति कहते ही हमारे अंदर से शांति के प्रकम्पन उत्पन्न होने लगते हैं। यहाँ पर आना मेरे लिए एक स्पीरिचुअल समन है। क्योंकि मैं इसे ईश्वर का बुलावा मानता हूँ।

धैर्यता ही वास्तव में दया और करुणा का मूलमंत्र है

जस्टिस मिश्रा ने कहा कि करुणा और दया के भाव से हम दूसरों के अधिकारों को समझ सकते हैं। उन्होंने दया और करुणा के भाव से दिए अपने निर्णयों को भी साझा करते हुए कहा कि धैर्यता ही

वास्तव में दया और करुणा का मूलमंत्र है। एक चिंतनशील व्यक्ति ही दयावान बन सकता है। एक मूक व्यक्ति भी दया और करुणा की भावनाओं को व्यक्त कर सकता है। बिना दया और करुणा के मानवीय जीवन नहीं हो सकता।

आत्मिक भाव से होगा शांति और प्रेम का संचार
सुप्रीम कोर्ट से सीनियर एडवोकेट अशोक शर्मा ने कहा कि कानून भी समाज में शांति और प्रेम स्थापित करने के लिए ही बनते हैं। लॉ शब्द भी कहीं न कहीं लव से ही शुरू हुआ है। प्रेम का सच्चा भाव ईश्वर द्वारा प्राप्त होता है, जबकि लॉ मनुष्यों ने बनाए हैं। अगर हम ईश्वर के बनाए नियमों पर चलें तो लॉ बनाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। उन्होंने कहा कि वे काफी समय से ब्रह्माकुमारीज के सम्पर्क में हैं यहाँ पर सिखाए जाने वाले राजयोग से उनके जीवन में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आया। एडवोकेट शर्मा ने कहा कि जहाँ सबके प्रति समभाव होगा वहाँ स्वतः ही शांति और प्रेम भाव का संचार होगा।

संगीत के द्वारा आध्यात्मिक क्रांति लाएगी पूरे विश्व में शांति

मुम्बई से बॉलीवुड प्लेबैक सिंगर श्रुति जकाती, सुखीराम मंडा, माउंट आबू से राजयोगी ब्र.कु. सतीश भाई एवं ब्र.कु. नितिन भाई ने अपने गीतों से सभी को परमात्म मिलन की कराई अनुभूति

कलेक्टर मीना व नगर निगम के पूर्व महापौर कोठारी ने कहा... समाज के हर प्रभाग की सेवा करने वाली यही एकमात्र संस्था

उदयपुर-राज। ब्रह्माकुमारीज मोती मगरी स्कीम सेवाकेंद्र की ओर से नगर निगम के सुखाडिया रंगमंच पर आयोजित 'संगीत के द्वारा आध्यात्मिक क्रांति लाएगी विश्व शांति' विषयक संगीत संध्या में मुम्बई से बॉलीवुड प्लेबैक सिंगर श्रुति जकाती एवं सुखीराम मंडा ने परमात्म-स्मृति के सुंदर अनुभूतिप्रद गीत गाकर लोगों को परमात्म-मिलन का अनुभव कराया। साथ में माउंट आबू ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय से आये राजयोगी ब्र.कु. सतीश



भाई एवं ब्र.कु. नितिन भाई ने अपने गीतों के द्वारा सभा में परमात्मा से समीपता का अनुभव कराते हुए समा बांध दिया। इस मौके पर कलेक्टर तारा चंद मीना व नगर निगम के पूर्व महापौर चंद्र सिंह कोठारी ने ब्रह्माकुमारीज की प्रशंसा करते हुए

कहा कि यही एकमात्र ऐसी संस्था है जो समाज के हर प्रभाग की सेवा करती है। अन्य कोई भी ऐसी सेवा नहीं करते, यह बहनें दिल को स्पर्श करने वाली बातें बताती हैं। एनसीसी के ग्रुप कमांडर कर्नल भास्कर ने बताया कि ब्रह्माकुमारी बहनों के

संपर्क में आकर मैंने हर परिस्थिति में अपने को समायोजन करके खुश रहना सीखा है, मेरी सहनशीलता बढ़ गई है। नगर निगम के डिप्टी मेयर पारस सिंघवी ने संस्था की सेवाओं को देखकर स्वयं को इस सेवा कार्य में सदा सहयोगी बनने का संकल्प लिया। राजस्थान विद्यापीठ के वाइस चांसलर सारंग देवोत ने संगीत के माध्यम से योग अनुभूति की सराहना की। वंडर सीमेंट के डायरेक्टर पाटीदार जी ने कहा कि यहाँ के सभी भाई-बहनों के शुद्ध वायब्रेशन से मन को बहुत सुकून मिलता है। कवि व्यास जी ने कहा कि पहले मैं बिका हुआ कवि था। आज से मैं ब्र.कु. कवि बन गया हूँ। सिंधी समाज के अध्यक्ष प्रताप राय चुग ने सुंदर नृत्य की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ा दी। सेवाकेंद्र की मुख्य संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रीटा दीदी ने सभी गीतों का आध्यात्मिक अर्थ समझाते हुए ईश्वरीय अनुभूति कराई। कुमारी शर्मिष्ठा, यशस्वी एवं अनुष्का ने नृत्य प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। सभी ब्र.कु. भाई एवं बहनों ने इस कार्यक्रम में सहयोग देकर शांति के अलौकिक प्रकंपन फैलाकर विश्व शांति का संदेश दिया।

खुशी के लिए आपको भी कुछ करना होगा!

हम अपनी खुशी के लिए दूसरों की तरफ देखते हैं, उनसे उम्मीद करते हैं, उनमें झांकते हैं, आशा रखते हैं। इसी सम्बंध में एक सुप्रसिद्ध विचारक एवहार्ट टॉल्ल का कहना है, 'दुनिया हमें खुशी देने के लिए जिम्मेदार नहीं है, वो हमें सीखने, मन से जागृत होने का अवसर देने के लिए बनी है।' यह छोटी-सी बात नहीं है। इसके विस्तार में सारी उम्मीदों की सच्चाई छुपी है।

हम अपने आसपास के हर इंसान, हर घटना, परिस्थिति से आशा करते हैं कि वो हमारे हिसाब से बने। ऐसे रंग में ढलती रहे कि हम खुश हों। जैसे हम हमेशा उम्मीद करते हैं मेरी हमेशा हर कोई तारीफ करे, मुझे एप्रीशिएट करे, मैं जैसे चाहूँ वैसे ही मेरे सामने पेश आये, मैं जब खेलना चाहूँ तो मेरे साथ खेले, मैं शॉपिंग करने जाऊँ तो मेरे साथ चले। कुछ घंटे तो हमारे हित में कोई काम करे। तो हमारी खुशी को ध्यान में रखकर इस तरह की सोच के दो सिरे हैं- पहला,



डॉ.कू. गंगाधर

ऐसी सोच रखकर हम दूसरों पर आश्रित हो जाते हैं। अपनी खुशियों, संतोष की कुंजी दूसरों के हाथों में सौंपकर हम अपने आप को परवश बना देते हैं। दूसरा, हम सीखने, भीतर तक संतोष और प्रसन्न कर देने वाले लम्हों, परिस्थितियों या इंसानों की तलाश नहीं करते। कोई और हमें खुशी न दे तो ऐसी ज़िद के चलते उसके प्रति नाराज़गी होना स्वाभाविक है। उसने हमारे हित के लिए काम नहीं किया, यह विचार साबित करता है कि आप निर्भर हैं। अगर यह सच मान लिया जाए कि दुनिया हमारी खुशियों को बुनने के लिए नहीं बनी है, तो व्यक्ति अपनी तरफ से मेहनत करने की कोशिश करेगा। जल्दी ही जान जायेगा कि कोई और मेरी प्रसन्नता के लिए कुछ करे, इसके पहले या इसके साथ ही मुझे भी कुछ ऐसा करना होगा जो प्रसन्नता के विस्तार का आधार बने। हमारी मानसिकता ऐसी बन गई है कि खुशी हमारी, मन भी हमारा और आशा रखते हैं कि दूसरा कोई खुशी का पानी दे। आपके मन की खुशी के स्वामी आप स्वयं हैं, तो भला उपरोक्त सोच के साथ आप खुश कैसे रह पायेंगे! ये सोचने की बात है। खुशी के लिए मुझे कुछ करना होगा। प्रसन्नता के लिए मेरी सोच को बदलना होगा।

अगर हम इसी सम्बंध में सोचते हैं कि हम जैसी अपेक्षा दूसरों से रखते हैं, वैसी ही दूसरे हमारे से भी रखते होंगे तो हमें क्या करना चाहिए? बेशक हम उनकी खुशी के लिए कुछ करेंगे ना! इसका मतलब ये है कि दूसरों को खुशी देने में हमारी खुशी समाई हुई है। जैसे बगीचे में फूलों को देखकर हमारा मन खुश होता है और हम सुख का अनुभव करते हैं। ये फूल जो खिले हुए हैं, इसकी तह तक जाते हैं तो पता चलता है कि फूल तो गंद से निकले पौधे का अंश है। उस पौधे ने अपनी खुशी के विरुद्ध गंद का साथ लेकर उसमें से अपनी खुशियां फूल के रूप में बाहर लाईं। फूल की खुशबू और पौधे की खाद की गंद दोनों विपरीत हैं। लेकिन पौधे ने उनका साथ लेते हुए उसमें से खुशियां ढूँढ़कर फूल के रूप में बाहर लाईं। न सिर्फ खुशियां बाहर लाईं बल्कि औरों को भी अपनी तरफ आकर्षित करने का व खुशबू बिखेरने का सुख भी दिया। प्रकृति के एक पौधे से हमें ये सीख मिलती है कि सिर्फ दूसरे के आधार पर छोड़ देने से हम खुश नहीं रह सकते, मुझे खुशी और प्रसन्नता के लिए खुद कुछ करना होगा। इस पहलू के आधार पर ही हमारी खुशी टिक पायेगी।

खुशी के लिए हमें आत्मावलोकन पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। कुदरत ने मुझे बहुत कुछ दिया है, इस सोच को और गहराई से सोचेंगे तो हमें मिलता है कि मेरे पास सोचने के लिए बहुत अच्छी बुद्धि है। मेरे अंदर कुदरत की बख्शीश है, योग्यताएं हैं, कला है, मैं स्वस्थ हूँ, मैं बहुत कुछ कर सकता हूँ, सृजनात्मक पाँवर मेरे पास है जिससे मैं दूसरों को देने में सक्षम हूँ। जब हम दूसरों को देते हैं तो खुश होते हैं। देने में खुशी है, लेने में नहीं। इस तरह से आप अपनी सोच को बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे तो आप पायेंगे कि खुशी तो मेरे अपने पास ही है। मुझे खुशी के लिए दूसरों से अपेक्षा रखने की आवश्यकता ही नहीं। इन शब्दों को आध्यात्मिक भाषा में हम आत्म-अभिमान कहते हैं। तब तो कहावत भी है, 'अंतर्मुखी सदा सुखी'।

स्वयं में शक्ति भरकर समस्या को परिवर्तन करो और समाधान स्वरूप बनो

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

कोई भी बात मुश्किल तब लगती है जब माया वार करती है। उस मुश्किल को सहज करने की विधि क्या है? मुश्किलों तो आयेंगी क्योंकि वायुमण्डल तो कलियुग का है ना और हमारा भी यह लास्ट जन्म है। तो लास्ट जन्म में सारा ही 63 जन्म का हिसाब-किताब चुक्ता होना ही है फिर चाहे योगबल से करो, चाहे बीमारी द्वारा करो, चाहे सहनशक्ति द्वारा करो। तब ही बाबा के साथ घर जा सकेंगे और साथ में फर्स्ट जन्म में भी आ सकेंगे।

समस्या को परिवर्तन करके समाधान स्वरूप बनाने के लिए स्वयं में शक्ति भर लो। अपने को शिवशक्ति समझेंगे तो कभी भी नरम स्वभाव, रोना, रूसना, इस प्रकार की कोमलता नहीं होगी। तो अपने को छोटी व कुमारी या पुरुषार्थी नहीं समझना। कुमारी है तो कोमलता है। अभी तो सरेण्डर हो गई, बाबा का स्थान मिल गया, बाबा की गुरु भाई बन गई, तो अभी कर्मों की गति को ध्यान में रखते हुए बहुतकाल से तीव्र पुरुषार्थी की स्थिति, बहुतकाल के पुरुषार्थ के विजयी की होनी चाहिए क्योंकि हम जो भी कुछ करते हैं, उसका हिसाब तो बन ही जाता है। गलती की तो दण्ड का हिसाब है।

केवल ज्ञान के प्वाइंट रिपीट नहीं हों, लेकिन शुद्ध संकल्पधारी समर्थी का स्वरूप प्रत्यक्ष हो। ज्ञान का मनन करके उसी में मगन हो जाओ अर्थात् भिन्न-भिन्न ज्ञान की प्वाइंट में मन स्थिर हो जाये। मनन करना अलग है, रिपीट करना अलग है वो भी अच्छा है। अलग-अलग टाइम पर अलग-अलग टॉपिक के प्वाइंट पर मनन करते मगन हो जाओ। जैसे योग की सब्जेक्ट में मनन करते-करते उस रूप में चले जाओ तो सारा व्यर्थ खत्म होता जायेगा। कुछ भी करके व्यर्थ संकल्प को स्टॉप करो क्योंकि वही योग में बहुत डिस्टर्ब करता है। बाबा कहता है जो मैं जिस दिन कहता हूँ, उस ताजे माल में ताकत होती है, उसी दिन आप प्रैक्टिकल करो तो आपको हिम्मत भी मिलेगी, बाबा की मदद भी मिलेगी। बासी खाना खाने से तो बीमारी ही आयेगी।

मिट्टी के मटके को भी चारों तरफ से देखकर लिया जाता है और मैं तुमको ऐसे ही सरेण्डर करा दूँगा? पहले करो तो सही, मरो तो सही।

जीते जी मरना तो पड़ेगा ना! तो मरना पड़ेगा, सहन करना पड़ेगा, शक्ति रूप बनना पड़ेगा, यह तो करना ही होगा। तब हमारे में वो शक्ति भरेगी, तब जीते ही मरना बहुत अच्छा और मीठा लगेगा। लेकिन जिसके संस्कार टक्कर होते होंगे तो कहेंगे गलती कर ली, पता नहीं किसके संग में आ गई, मर तो गई लेकिन है बड़ा मुश्किल। सरेण्डर का फाइल तो बन गया, लेकिन है बड़ा मुश्किल! अभी घर भी नहीं जा सकती, शादी भी नहीं कर सकती तो अभी क्या करें और सेन्टर पर चल भी नहीं सकती, अभी कहाँ जाऊँ, तो व्यर्थ संकल्प चलेंगे। अभी माया किस-किस रूप में व्यर्थ लाती है और किस शक्ति से उस पर विजय पा सकते हैं वो दोनों बातें अच्छी तरह से जानते तो हैं, परन्तु होता क्या है? उस समय वो याद ही नहीं आता है, समय पर शक्ति यूज करने नहीं आती है इसके कारण बार-बार समस्यायें व व्यर्थ संकल्प आते रहते हैं।

समझो आपके पास ईश्या आई, उसको आपने जीता, तो कैसे जीता? चाहे मदद लेके जीता, चाहे योग से जीता, चाहे मनन से जीता, जीता तो सही, पास तो किया ना! फिर दूसरे बारी जब आता है तो फिर क्यों फेल हो जाते? समझते हैं यह समस्या है, पेपर है तो अभी इसमें सिर्फ सोचने-समझने से कुछ नहीं होगा।

इसके लिए बाबा कहते थे जैसे तलवार को म्यान में डालके रखते हैं लेकिन अगर बीच-बीच में उसको साफ नहीं करें, यूज नहीं करें, देखें नहीं तो जब समय आयेगा और उस समय म्यान से तलवार निकालेंगे तो उससे अपनी भी अंगुली नहीं काट सकेंगे क्योंकि जंक खाके उसकी वो धार खत्म हो गई होगी। तो बार-बार मनन करो, जैसे सहनशक्ति को यूज कैसे करें? मानो मेरे सामने ऐसे पेपर आये या फलाने ने मेरे साथ यह किया, उस समय देखो क्या करना है? तो शक्तियों को यूज करते उसका वर्णन करते रहो। आज समाने का पेपर दूँगी, तो उस समय क्या करूँगी, ऐसे यह मनन करते रहो और यूज करते रहो। यूज नहीं किया तो रिवाइज करो। यह करने से क्या फायदा होता है? यह न करने से क्या नुकसान होता है, ऐसे मनन करो। तो मनन करने से वो शक्ति आपके पास हमेशा हाज़िर रहेगी।

अन्तर्मुखी जो होगा वो सदैव सुखी होगा

राजयोगिनी दादी जानकी जी

यह अच्छा नहीं है, यह ख्याल आना माना की हुई कमाई खलास कर देना। मैं कहती हूँ जो करना है अब कर लें, जो किया है अच्छा किया है, बाकी और अच्छा क्या करना है! साइलेन्स में बैठे देख रही थी कि अभी हमें और क्या करना है। दुआ, दया, कृपा, आशीर्वाद इन चारों में बहुत अच्छे अनुभवों हैं। सारी लाइफ कभी किसी से झगड़-झगड़ नहीं की है, यह भगवान की बड़ी कृपा रही है। मैंने कभी इन बातों में अपने को टायर्ड नहीं होने दिया है क्योंकि झगड़-झगड़ करने से विकर्म विनाश तो नहीं होंगे पर और ही विकर्मों का खाता बढ़ जायेगा इसलिए खबरदार, होशियार, सावधान रहना। तो अन्दर से मेरी भावना है कि अटेन्शन रखो। टेन्शन फ्री। मैं तो टेन्शन नहीं कर सकती हूँ।

यह शरीर भले कितना भी तमाशा दिखाता है, शरीर समझता है इसको जितना सहन करना हो करे, मैं छोड़ूँगा नहीं। परन्तु आप मुझे कुछ नहीं है, पूरे दिनभर मैं कैसे रहती हूँ, कैसे बिताती हूँ फिर भी यह टाइम आपसे मिलाता है। और आप खींचके आ जाते हो तो यह कमरा बहुत अच्छा है। ऐसा कमरा पूरे शान्तिवन में कहीं नहीं मिलेगा। हॉस्पिटल जैसी खटिया होते भी सहनशक्ति चाहिए इस पर

सोने की। यहाँ बैठने में सब दर्द भूल गया, है नहीं कुछ। तो यह बाबा फिर मुझे कहता है मैं सर्वशक्तिवान हूँ, तू मेरी बेटी हो ना, मास्टर सर्वशक्तिवान हो ना, तो फिर क्यों कहती हो मैं सहन नहीं कर सकती हूँ। अष्ट शक्तियों में से भी सहनशक्ति, समाने की, समेटने की यह तीन शक्तियां बहुत काम कर रही हैं। इन तीन शक्तियों के पीछे बाकी रही पाँच शक्तियां भी ऑटोमेटिक काम करती हैं। परन्तु मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, याद में ऐसी स्थिति होवे।

अन्तर्मुखी जो होगा वो सदैव सुखी होगा, अन्तर्मुखता से एकाग्रता अच्छी होती है, एकान्त अच्छी लगती है। एकान्त में बाबा से मिलना, बाबा से बातें करना बहुत अच्छा लगता है। बाबा कहता है जो बाबा के गुण हैं वो तुम्हारी सूरत से दिखाई दें। किसी ने लिखा है कि हमको अपने लाइफ का कदर होगा तो बाबा खुश होगा क्योंकि जैसा कर्म मैं करूँगा मुझे देख और करेंगे। सारी विश्व की सेवायें बाबा ने कैसे की, कराई हैं। सफल करना और सफल कराना यह सब्जेक्ट बड़ी अच्छी है। मेरे पास यह तन भी ऐसा है, मुझे नाटक दिखाता है फिर भी मैं अटकती नहीं हूँ।

तो अभी कोई रूखे नहीं, मीठे बनो, प्यारे बनो तो भगवान खुश हो। तुम भी खुश हम भी खुश। जी खुश तो जहान खुश।

मन्सा वृत्ति को प्युअर बनाने के लिए दैहिक वृत्तियों को समाप्त करो

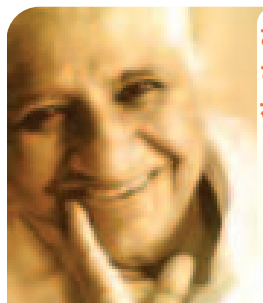
मन्सा की पवित्रता कहाँ तक धारण की है? प्रकृति में चंचलता क्यों होती है। खान-पान में वृत्ति क्यों जाती है? फैशन व कपड़ों आदि में शौक क्यों? देह-अहंकार का नशा क्यों? मन में गुस्सा उठता है क्यों? जब बाबा इशारा देते बच्चे अन्तर्मुख हो जाओ फिर भी अन्तर्मुख क्यों नहीं होते? बाबा कहते बच्चे गम्भीर हो जाओ तो भी इशारे को क्यों नहीं समझते? योग में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं? क्यों नहीं शीतल योगी बनते? पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं?

इन सब प्रश्नों का जवाब यही है कि अन्दर की मन्सा वृत्ति प्युअर नहीं है। अन्दर में प्युरिटी हो तो उसकी शक्ति से यह सब बातें समाप्त हो जायेंगी। इसका अपने ऊपर अटेन्शन हो। बाहरमुखता के कारण ही वृत्ति जाती है। बाहरमुखता आने से ही संग का रंग लगता है और विकारों के वशीभूत होते हैं।

हम सब रक्षक बाप की रक्षा के नीचे बैठे हैं, इसलिए ख्याल चला कि हर एक अपने अन्दर ऐसी विल पाँवर

क्यों नहीं रखते हैं? क्या आप पाण्डव ऐसी चैलेंज कर सकते हो कि हम पक्के पवित्र योगी, सर्व कर्मन्द्रिय जीत हैं? कोई भी देह की आकर्षण मुझे आकर्षित कर नहीं सकती?

दिखाते हैं कि जगदम्बा काली ने



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

अपने पांव नीचे असुर को दबाया है। यदि थोड़ी भी बुरी दृष्टि वाला है तो उसको असुर कहा जाता है। उसे एकदम पांव नीचे दबाया, उसका नाम है शिवशक्ति।

कोई भी वृत्ति वाला क्यों नहीं आवे, उसकी वृत्तियां सामने आते ही बदल

जायें। दुनिया इस बात को मुश्किल समझती है और बाबा हमें इसी बात पर विजय प्राप्त कराते हैं।

जो बाल ब्रह्मचारी योगी हैं, वह बड़े नाज़ से कहेंगे, ऐसे बाल ब्रह्मचारियों ने यह रिकार्ड तोड़ा है। तो

मैं आज से इसे 100 प्रतिशत भस्म करता हूँ- क्या यह वायदा अपने आपसे कर सकते? या सोचते हैं कोशिश करेंगे? पुरुषार्थ करेंगे? तो अब इस प्रतिज्ञा की पक्की राखी बांधो और मन्सा से भी अपवित्रता के नामनिशान को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प लो।



अपने आपसे पूछो कि क्या हमने कम्पलीट मात्रा में इन विकारी वृत्तियों को जीता है? अगर नहीं तो क्यों? हँसी-मज़ाक भी क्यों?

हमारे पाण्डव पक्के योगी रहो- यह है मेरा संकल्प। एक-एक पाण्डव चमकता हुआ योगी दिखाई दे। तो खुद

की सूक्ष्म चेकिंग करो कि हमारी मन्सा, वाचा सूक्ष्म में भी कहाँ है? अगर मन्सा वृत्ति भी किसी देहधारी में जाती है तो दृढ़ता की तपस्या अग्नि में उस वृत्ति को समाप्त कर दो।

हम शूद्र जन्म से मर गये तो फिर हमारे में वह संस्कार क्यों? अभी हमारा जन्म बदल गया, संस्कार बदल गये- तब ब्राह्मण बने। नहीं तो ब्राह्मण ही नहीं कहो। ब्राह्मण माना शीतल काया वाले योगी। जब काम की वृत्ति पूरी नहीं होती है तो गुस्सा निकलता है। दैहिक वृत्ति जाना माना पाप, तो पुण्य आत्मा कब बनेंगे? जो कम्पलीट विजयी हैं उसे ही पुण्य आत्मा कहा जायेगा। तो क्या यह सम्भव नहीं हो सकता? क्या पाण्डव ऐसे पाँवरफुल बनकर विजयी नहीं हो सकते? आज से इस संस्कार का अन्तिम संस्कार कर दो। सम्भव है या नहीं? हम सब विजयी रत्न हो जाएं। साइलेन्स का ऐसा वायुमण्डल बनाओ। पवित्रता के बल से विश्व को पावन बनाने की सेवा करो।

पुरुषार्थ का सबसे बड़ा दुश्मन है सुस्ती

1. क्या थकावट का सुस्ती से सम्बंध है? सुस्ती तन की है या मन की? बदन टूटता है, चक्कर आता है, क्या इसमें स्वास्थ्य का कारण है या कुछ और?

2. कई लोग एक-दो कार्य करने के बाद कहते हैं कि अब हमसे और नहीं होता, किसी और को बताओ जबकि उनमें ताकत है।

3. कोई सहयोग न देना- क्या यह उनकी सुस्ती है या दिव्य गुण की कमी? क्योंकि ईर्ष्या होती है कि हम इन्हें सहयोग देंगे तो नामाचार इनका होगा, एक दफ़ा लोगों को पता तो चले कि हमारे सहयोग के बिना काम कैसे होगा? यह ईर्ष्या है या द्वेष है या सुस्ती है?

4. नींद आती है तो या तो कोई दवाई ऐसी खा रहे हैं या बीमारी ऐसी है? लोग कहते हैं कि यह कार्य कर दो, तो वो कहता है कि नींद आ रही है। क्या इसे सुस्ती कहेंगे? परंतु शरीर से तो वे मोटे-ताजे हैं।

5. कई व्यक्ति कार्य में पूरा मन नहीं लगाते, उसे काम चलाऊ करते हैं, क्या यह सुस्ती है? ऐसा भी नहीं है कि वो जल्दी में हैं। उनके पास समय भी है, फिर? सुस्ती एक प्रकार की होती है या अनेक प्रकार की? क्या यह उस व्यक्ति का स्वभाव (नेचर) है या क्षणिक है? कइयों के लिए लोग कहते हैं कि यह सुस्तीमिजाज है। तो भाव है कि उसका स्वभाव ही ऐसा है।

6. कुछ लोग वैसे तो अलर्ट (चुस्त) होते हैं परंतु कुछ दिन ऐसे होते हैं जिनमें वे उदास होते हैं। कई अन्दर महसूस भी करते हैं कि यह हमारी सुस्ती है परंतु जानते हुए भी उसे भगा नहीं सकते क्योंकि हिम्मत नहीं होती। मन करता है कि यह काम कर लें, फिर सोचते हैं कि छोड़ो। यहाँ कोई छुट्टी तो होती नहीं। अभी मेरा मूड नहीं है। कुछ हँस-बदलें भी तो सही। तो क्या इसे सुस्ती कहें? वह तो सोच रहा है कि जीवन में कुछ मनोरंजन भी होना चाहिए, नहीं तो जीवन ऊब जायेगा। वो तो यह सोच रहा है परंतु वास्तव में यह सुस्ती है। ऊपर से लगता है कि यह सब्ज बाग है परंतु पाँव रखो तो दलदल है।

सुस्ती के बारीक स्वरूप का मालूम होना चाहिए क्योंकि यह साधक का बहुत बड़ा दुश्मन है। जो व्यक्ति अपना कर्तव्य नहीं

करता, आध्यात्मिक साधना नहीं करता वो भी कुम्भकरण है। बस मज़ाक करते-करते समय खराब करना, एक से दूसरे के पास बैठे गप्पे मारना, कुछ खास काम न करना जैसे कि उम्र ही काट रहे हैं। करना कुछ नहीं है। इसको आलस्य भी कहा जाता है। आलस्य अर्थात्



राजयोगी ब.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

सुस्ती तो मीठा जहर है। चूहे के माफिक काट देती है कि पता ही नहीं पड़ता। सुस्ती जेब काट की तरह है, की हुई कमाई और सम्पत्ति को लूट लेती है। मन करता है कि बातें करें, हँसें, बहलें जीवन इसी का नाम है। बाबा के हम बने हैं, कुछ तो मिलेगा। इसी में वे खुश हो जाते हैं। जैसे कम्प्यूटर में वायरस घुस जाये तो उसे निकालना कितना मुश्किल होता है! ऐसे ही सुस्ती अगर एक बार मनुष्य में घुस जाये तो उससे निकालना बहुत मुश्किल होता है। यह तो जैसे कि जंग लगा पड़ा है। कहानी है ना ऊँट वाला कहता है कि बेर मुँह में डाल दे।

सुस्ती एक प्रकार की जड़ता है। जैसे किसी के शरीर में लचीलापन न रहे तो वह चेतन होते भी अधमरा है। जैसे मशीनरी जाम हो जाये। सुस्ती की बीमारी भी जब लग जाती है तो बुद्धि चलती नहीं। वह जड़ता में आ जाती है। बाबा कहते हैं, बच्चे, सेवा में हड़डी-

हड़डी स्वाहा करो। हड़डी तो छोड़ो कुछ लोग तो थोड़ी भी सेवा नहीं करते। जिनके साथ दोस्ती, भागीदारी हो यदि वे सुस्त हों तो दूसरे भागीदार को बोझ लगता है, अच्छा नहीं लगता। भविष्य जिनका अच्छा न हो, भाग्य जिनका खोटा हो उनका यह हाल होता है।

यज्ञ की कुछ-न-कुछ सेवा करना माना अपना भविष्य ऊँचा बनाना, समय को सफल करना क्योंकि यज्ञ-सेवा श्रेष्ठ कर्म है। संगमयुग का कोई भी श्रेष्ठ कर्म 21 जन्म फल देता है। दूसरों को मत देखो। आप कोई कर्म करेंगे तो भरपूर हो जायेंगे। ना करेंगे तो अंत खराब। कम से कम यह तसल्ली तो रहे कि हमने कुछ किया है। सुस्ती छोड़ चुस्ती में आओ, मस्ती में आओ। बाबा के बच्चों के लिए तो सेवा परमोधर्म है। मान लीजिये, आप अकेले कार्य कर रहे हैं, बाद में कर लेंगे। क्या यह सुस्ती नहीं है? संक्षेप में 'सुस्ती' की व्याख्या ऐसे कर सकते हैं कि किसी कार्य को करने के लिए हमारे में शारीरिक, मानसिक क्षमता है, समय है, साधन हैं, फिर भी हम उसे नहीं करते हैं तो सुस्ती है। जितनी ताकत है उतना दिल लगा कर मेहनत करना, कार्य अधूरा न छोड़ना, सम्पूर्णता से करना, अपनी क्षमता से दत्तचित्त हो कार्य करना, बीच में न छोड़ना, इसे चुस्ती कहेंगे।

कई बार सुस्ती के शारीरिक कारण भी होते हैं। भारी भोजन करना, एक्सरसाइज न करना जिससे गैस बनती है। व्यक्ति का स्वभाव सुस्ती का नहीं होता है लेकिन शरीर संभालने का सही ज्ञान न होने के कारण सुस्त बन जाता है। तीव्र पुरुषार्थी सुस्ती को भगा कर सेवा में लग जाता है। अच्छा पुरुषार्थी सुस्ती को अपने ऊपर काबू न पाने देगा। फिर कई जगह का वातावरण ही ऐसा होता है कि व्यक्ति न चाहते हुए भी सुस्तराम बन जाता है। ज़िम्मेवार व्यक्ति कारणों को न देख, काम कर लेता है। उसे चुस्त व्यक्ति कहेंगे। अरुचि को भी लोग सुस्ती समझ लेते हैं। रुचि न होने पर अगर कोई काम नहीं करता तो वह सुस्ती नहीं है। अगर उसे प्रतिफल और भाग्य का एहसास कराकर रुचि पैदा करें, तो सुस्तराम चुस्तराम बन सकता है।



पणजी-गोवा। राजभवन में 'गोवा मुक्ति दिवस' के अवसर माननीय राज्यपाल पी.एस. श्रीधरन पिल्लई और माननीय मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत को शुभकामनाएं एवं ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. शोभा बहन।



दीव। ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'श्रीमद्भागवत गीता की राह, वाह जिंदगी वाह' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए माउण्ट आबू से वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, कलेक्टर फॉर्मन ब्रह्मा, एस.पी. मून भूषण सिंह, जिला पंचायत प्रमुख अमृता बामणिया, मेयर हेमलता सोलंकी, ए.डी.एम. विवेक कुमार तथा आशा वुर्मेन फाउंडेशन की प्रमुख तरुणा बहन।



ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)। महाराज बाड़े पर ब्रह्माकुमारीज एवं पर्यावरण संरक्षण सचेतक अभियान समिति व नगर निगम ग्वालियर के संयुक्त तत्वाधान में शासकीय गोरखी स्कूल सहित अन्य कई स्कूलों के सहयोग से आयोजित पर्यावरण संरक्षण के लिए विशाल जन जागरूकता रैली का शुभारंभ नगर निगम आयुक्त किशोर कन्याल ने हरी झंडी दिखाकर किया। कार्यक्रम में उपस्थित रहे अपर आयुक्त अमर सत्य गुप्ता, संरक्षण सचेतक समिति से दीपक सचेती, वरिष्ठ समाजसेवी एवं पर्यावरणविद् गिरांज दानी, डॉ. सुरेन्द्र प्रधान, डॉ. मयंक श्रीवास्तव, ब्र.कु. डॉ. गुरचरण सिंह, ब्र.कु. आदर्श दीदी तथा ब्र.कु. प्रहलाद।



सूरत-ओलपाड(गुज.)। गीता जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में 'गीता का भगवान कौन' विषय पर संबोधित करते हुए ब्र.कु. सोनल दीदी, चेयरपर्सन एवं स्पीकर। साथ में मंचासीन हैं महंत श्री संतोषानंद जी, राज नगर, साध्वी श्रीमती शोभना बहन, पीठाधीश कैलाश आश्रम सरसाना तथा अन्य।



पाटण-सातारा(महा.)। नगर सेवक राजेंद्र राऊत को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. विद्या बहन व ब्र.कु. सुरभि बहन।



विदिशा-म.प्र.। 'महिलाएं नए भारत की ध्वजवाहक' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में वरिष्ठ समाजसेविका प्राची बहन, किरन बहन, ब्र.कु. रुक्मणी बहन, ब्र.कु. रेखा बहन व अन्य।



हैदराबाद-तेलंगाना। स्पोर्ट्स विंग द्वारा ब्रह्माकुमारीज शांति सरोवर के ग्लोबल पीस ऑडिटोरियम में 'विनिंग द गेम ऑफ माइंड' विषय पर आयोजित खेल सम्मेलन में खेल राज्यमंत्री वी. श्रीनिवास गौड़, एम.एस.के. प्रसाद, पूर्व बीसीसीआई मुख्य चयनकर्ता व क्रिकेट कमेंटेटर, रमेश नागापुरी, द्रोणाचार्य अवॉर्ड, नेशनल एथलेटिक्स कोच, डॉ. पी.रविशंकर, राष्ट्रीय तीरंदाजी कोच, वी.वी. सुब्रमण्यम, उप संपादक (खेल), द हिंदू, डॉ. सी. वीरेंद्र, स्पोर्ट्स साइकोलॉजिस्ट, आराधना शर्मा, उच्च प्रदर्शन पोषण सलाहकार, ब्र.कु. ई.वी. गिरीश, इंटरनेशनल मोटिवेशनल स्पीकर और लाइफ कोच, राजयोगिनी ब्र.कु. कुलदीप दीदी, वाइस चेयरपर्सन, स्पोर्ट्स विंग, ब्र.कु. डॉ. जगवीर, राष्ट्रीय समन्वयक, स्पोर्ट्स विंग सहित विभिन्न खेल अकादमियों, स्टेडियमों, स्कूलों और संस्थानों से हजारों खिलाड़ी, प्रशासक, युवा और खेल के प्रति उत्साही लोग शामिल रहे।



मुम्बई-घाटकोपर। बीएमसी के 'माझी मुंबई, स्वच्छ मुंबई' स्वच्छता अभियान में शामिल होकर ब्रह्माकुमारीज के भाई-बहनों ने घाटकोपर ईस्ट, पंत नगर तथा एमजी रोड आदि कई इलाकों में साफ-सफाई की व सभी को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। इस अभियान में मुम्बई पुलिस एवं गुरुकुल कॉलेज के सदस्य भी शामिल रहे।



इंदौर-म.प्र.। वैष्णव विद्यापीठ विद्यालय के कुष्ठ धाम परिसर में आयोजित कार्यक्रम में स्कूल के डायरेक्टर एस.डी. वैष्णव ने कालानी नगर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जयंती बहन व ब्र.कु. सुजाता द्वारा कुष्ठ धाम निवासियों को अन्न एवं वस्त्र दान करवाने के पश्चात् समूह चित्र में दान का महत्व बताते हुए ब्र.कु. जयंती बहन। साथ हैं स्कूल डायरेक्टर एस.डी. वैष्णव एवं ब्र.कु. सुजाता बहन तथा विद्यार्थीगण।



राजयोगिनी ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

कैसे हम अपने जीवन के अंदर सुख, शांति, प्रेम, आनंद, ज्ञान, शक्ति व पवित्रता इन सातों गुणों से बैटरी चार्ज करके भरपूर हो जाएं? हमारे भीतर शक्ति है उसको बाहर ले आना है। ड्रिलिंग करना है और उसको बाहर ले आना। और कैसे ले आएंगे उसको, तो हर आत्मा के पास शक्ति है। जिस तरह से शरीर को पांच तत्व चाहिए तो उस पांच तत्व की पूर्ति के लिए पांच इंद्रियां हैं। जिसके माध्यम से हम शरीर को जो पांचों तत्व चाहिए उसको पूर्ण करते हैं। आँखों के द्वारा रोशनी, नाक के द्वारा ऑक्सीजन, मुख के द्वारा भोजन-पानी ठीक इसी तरह आत्मा को जो सातों गुणों से बैटरी चार्ज करनी है उसके लिए आत्मा के पास भी इनबिल्ट शक्ति है जो आत्मा के साथ आती है शरीर में और शरीर छोड़ने पर आत्मा के साथ चली जाती है और वह तीन सूक्ष्म शक्ति है मन, बुद्धि और संस्कार।

मन है आत्मा की सोचने की शक्ति का दूसरा नाम, बुद्धि है समझने की शक्ति का दूसरा नाम और संस्कार हमारे कर्मों का प्रभाव है इसीलिए कहावत है कि हे मानव सोच-समझ कर करना, सोचने का काम मन करता, समझने का काम बुद्धि करती

मन के मालिक कैसे बनें...!!!

और फिर कर्म करना। लेकिन आज शायद उल्टा हो गया व्यक्ति पहले कर लेता है फिर सोचता है, फिर समझता है इसीलिए उसको पश्चाताप करना पड़ता है, या सॉरी कहना पड़ता है बार-बार किसी को। अरे पहले से ही अगर हम यह मन-बुद्धि और संस्कार को इसी विधि से चलायें तो हमें किसी को सॉरी कहना ही ना पड़े। मन जो आत्मा की सोचने की शक्ति का दूसरा नाम है यह बहुत पॉवरफुल इंस्ट्रूमेंट है, हमारे पास जो बैटरी चार्ज करने में बहुत मदद करता है। कैसे मनुष्य का मन हर वक्त सोचता रहता है। कुछ न कुछ सोचता ही रहता है। कितने

किसी साइकोलोजिस्ट ने सही कहा है कि अगर एक व्यक्ति कम से कम गति से सोचे तो भी एक मिनट में 25 से 30 विचार मन के अंदर आ जाते हैं। अब सोचने की बात है कि कम से कम गति से सोचते भी अगर 25 से 30 विचार आ जाते हैं तो अधिक से अधिक व्यक्ति कितना सोचता होगा?

असंख्य विचार सारे दिन के अंदर आ जाते हैं। किसी साइकोलोजिस्ट ने सही कहा है कि अगर एक व्यक्ति कम से कम गति से सोचे तो भी एक मिनट में 25 से 30 विचार मन के अंदर आ जाते हैं। अब सोचने की बात है कि कम से कम गति से सोचते भी अगर 25 से 30 विचार आ जाते हैं तो अधिक से अधिक व्यक्ति कितना

सोचता होगा? हाइपर जिसको कहते हैं कि हाइपर की स्टेज क्या होगी और 1 दिन के ही विचारों को लिया जाए और उसको क्लासिफाई (श्रेणीबद्ध) कर दिया जाए तो हर मनुष्य के मन के अंदर चार प्रकार के विचार आते हैं पहले प्रकार के विचार हैं जिसको हम कहते हैं पॉजिटिव थॉट, अच्छे विचार, सकारात्मक विचार, वैल्यू बेस्ड थॉट्स।

दूसरे प्रकार के विचार हैं जिसको कहते निगेटिव विचार, बुरे विचार, नकारात्मक जो कोई न कोई बुराइयों को लेकर, कोई न कोई विकृतियों को लेकर, हीनता की भावना को लेकर, स्वार्थ को लेकर यह सारे विचार निगेटिव विचार हैं।

तीसरे प्रकार के विचार हैं आवश्यक विचार आज मुझे यहां जाना है, इस व्यक्ति से मिलना है उसको यह मैसेज देना है। जो कर्मों से रिलेटेड विचार हैं।

चौथे प्रकार के विचार हैं वेस्ट थॉट, फालतू विचार। जब मन कहता कुछ सोचने के लिए नहीं है तो बीती हुई बातों को चलाता रहता है। ऐसा होता तो अच्छा होता, यह कहते तो अच्छा होता, अधिकतर भूतकाल में बीती हुई बातों को हम इस तरह से उगारते हैं और उसका स्वरूप बन जाते हैं और उसमें भी अधिकतर जो रिग्रेट्स (पछतावा) है, उसको ज़्यादा व्यक्ति सोचता है इसीलिए उसको वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी, वेस्ट थॉट्स कहते हैं। तो ये चार प्रकार के थॉट्स दिन में आ जाते हैं। इसे ही हमें बार बार चेक करना पड़ता है। और करना भी है।



गांधी नगर-गुज. भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता में गुजरात के नये मुख्यमंत्री भूपेंद्र भाई पटेल तथा अन्य मंत्रियों की शपथ विधि में आमंत्रित किये जाने पर शपथ ग्रहण के पश्चात् माननीय मुख्यमंत्री को शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कैलाश दीदी तथा चिलोडा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. तारा दीदी। कार्यक्रम में भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ, गुजरात के पूर्व उपमुख्यमंत्री नितिन भाई पटेल तथा अन्य राजनेताओं सहित पूरे भारतवर्ष से संतजन मौजूद रहे।



कोरबा-छ.ग. ब्रह्माकुमारीज इंदौर जोन की वर्तमान समय की क्षेत्रीय निदेशिका रही राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पूर्व कृषि पर्यटन मंत्री बृजमोहन अग्रवाल, वरिष्ठ नेता एवं विधायक पुनूलाल तथा वरिष्ठ भाजपा नेता अनिल सिंह मेजर। इस दौरान डॉ. के.सी. देबनाथ, संचालक अश्वय हॉस्पिटल, शेखर राम सिंह, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रुक्मणी दीदी एवं सह संचालिका ब्र.कु. बिन्दू बहन सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की।

घुटने का दर्द होगा सही, बस इतना करें

मनुष्य जीवन में उसकी आयु के 50 साल के बाद धीरे-धीरे शरीर के जोड़ों में से लुब्रिकेन्ट्स एवं कैल्शियम बनना कम हो जाता है। जिसके कारण जोड़ों का दर्द, गैप, कैल्शियम की कमी आदि समस्याएं सामने आती हैं, जिसके चलते आधुनिक चिकित्सा आपको ज्वॉइंट रिप्लेस करने की सलाह देती है, तो कई आर्थिक रूप से सम्पन्न मानते हैं कि हमारे पास तो बहुत पैसे हैं तो घुटने चेंज करवा लेते हैं। किंतु क्या आपको पता है कि जो चीज कुदरत ने हमें दी है, वो आधुनिक विज्ञान या कोई भी साइंस नहीं बना सकती। अप्राकृतिक ज्वॉइंट फिट करवा कर थोड़े समय 2-4 साल तक ठीक हो सकते हैं, लेकिन बाद में आपको बहुत ही तकलीफ होगी।

ज्वॉइंट रिप्लेसमेंट का सटीक इलाज आज हम आपको बता रहे हैं, जिसे आप ऐसे हजारों ज़रूरतमंद लोगों तक पहुंचाए जो रिप्लेसमेंट

के लाखों रुपये खर्च करने में असमर्थ हैं। 'बबूल' नाम के वृक्ष को आपने ज़रूर देखा होगा। यह भारत में हर जगह बिना लगाए ही अपने आप खड़ा हो जाता है।



स्वास्थ्य

अगर यह बबूल नाम का वृक्ष अमेरिका या तो विदेशों में इतनी मात्रा में होता, तो आज वही लोग इनकी दवाई बनाकर हमसे हजारों रुपये लूटते। लेकिन भारत के लोगों को जो चीज

मुफ्त में मिलती है, उनकी उन्हें कोई कदर नहीं है।

प्रयोग इस प्रकार करें :-

बबूल के पेड़ पर जो फली (फल) आती है, उसको तोड़कर लायें। आपको शहर में नहीं मिल रहे तो किसी गांव जाएं, वहाँ जितने चाहिए उतने मिल जायेंगे, उसको सुखाकर पाउडर बना लें।

सुबह 1 चम्मच पाउडर गुनगुने पानी के साथ लें। इसे खाली पेट लें और इसे लेने के एक घंटे बाद ही किसी अन्य पदार्थ का सेवन करें।

सही रूप से केवल 2-3 महीने सेवन करने से आपके घुटने का दर्द बिल्कुल ठीक हो जायेगा। आपको घुटने बदलने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

डॉ. राहुल जैन, नैचुरोपैथी एवं एक्वूप्रेशर, जयपुर, 09460555101



बिजावर-म.प्र. ब्रह्माकुमारीज के नवनिर्मित 'आशीर्वाद भवन' के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए माउण्ट आबू से वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, विधायक बबलू शुक्ला के बेटे एवं प्रतिनिधि धनंजय अभिराम शुक्ला, नगर पालिका अध्यक्ष बहन लक्ष्मी वीर सिंह यादव, छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शैलजा बहन, नौगांव सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नंदा बहन, खजुराहो सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. मीरा बहन एवं अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, आजीवन - 6000 रुपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO:- 30826907041, IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya, Shantivan

Note:- After Transfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org

OR

Whatsapp, Telegram No:- 9414172087



SCAN TO PAY
WITH ANY BHIM UPI APP



Merchant Name : RERF Om Shanti Media

vpa : 09000r0076184@barodampay



जरा सोचें...

सम्पूर्ण सम्पन्न बनने की अपने में ही तीव्र इच्छा शक्ति

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

सम्पन्नता मिनस् स्वयं में भरपूरता। भरपूरता के बाद ही सम्पूर्णता आती है। अगर कोई भी बात का अभाव है तो वह चीज परफेक्ट नहीं कही जाती। परफेक्ट बनना है, सम्पूर्ण बनना है तो अपने आप में हर बात की भरपूरता चाहिए। कोई चीज आप बनाते हैं तो उसमें जो डालना है वह सब चाहिए। उसमें से कोई एक चीज की भी कमी होगी तो परफेक्ट बनी ऐसा नहीं कहेंगे। कहेंगे बहुत अच्छी बनी है पर नमक कम है या थोड़ी मिर्च कम है, तो कमी खलती है। हमारे पास यह है, यह है पर यह नहीं है, कोई भी चीज का अभाव या कमी पूरा सुख नहीं देता। तो जैसे स्थूल चीजों में हम चाहते हैं कि सबकुछ हो, ऐसे अभी हम स्वयं को भरपूर कर रहे हैं तो ज्ञान भी चाहिए, गुण भी चाहिए, शक्ति भी चाहिए, कला भी चाहिए, विशेषता भी चाहिए, अच्छी अनुभूतियां भी चाहिए तो अपने आप को देखना है कि बाबा ने तो सबकुछ दिया है। सब खजाने दिए हैं। हमने अपने आप को कहाँ तक भरा है, कौन-सी कमी है? क्या विचार है, उन कमियों के साथ ही चलते रहना है? बहुत लम्बा समय बाबा ने पुरुषार्थ का दिया।

भगवान को जो ज्ञान देना था, प्यार देना था पुरुषार्थ करना था वो सबकुछ बाबा ने करा दिया। बाबा ने तो अपनी लीला समेट ली, अब हमें क्या करना है? कोई भी चीज का पुरुषार्थ करते हैं तो उस पुरुषार्थ

की सफलता तब कही जाती है जब लक्ष्य को अचीव करते हैं, मंजिल पर पहुंच जाते हैं। तब कहेंगे हमारी मेहनत सफल हुई। हम सभी भी पुरुषार्थ कर रहे हैं। हमें अपने आप से पूछना है कि बाबा ने लक्ष्य दिया है तो चल रहे हैं या मैंने अपने आप में भी इसको स्वीकार किया है? क्योंकि जब तक हम खुद अपना लक्ष्य नहीं बनाते बाबा तो कहते हैं, दादियां कहती हैं, दीदीयां कहती हैं पर मेरा अपना लक्ष्य हो कि मुझे

जो कहा वो उन्होंने किया। सत्य है या नहीं वह तो पता ही नहीं था। लेकिन लगन थी, पुरुषार्थ था।

हमारे पास सत्य है, पूरा ज्ञान बाबा ने दिया है कि कैसे बाप समान सम्पन्न बन सकते हैं। अब आवश्यकता है तीव्र इच्छा शक्ति की कि मुझे क्या बनना है। कितना लेना है बाबा से। तो जो भी रही-सही, अपनी कोई भी कमी है उसको हमें भरना है। जब से जिसने अलौकिक जन्म लिया, वो ब्राह्मण जीवन हमारा अंत तक चलेगा। पर

अब आवश्यकता है तीव्र इच्छा शक्ति की कि मुझे क्या बनना है। कितना लेना है बाबा से। तो जो भी रही-सही, अपनी कोई भी कमी है उसको हमें भरना है।

ऐसा बनना है। जब तक हम दिल से खुद स्वीकार नहीं करते तब तक हम बन नहीं सकते। इसलिए रोज अमृतवेले योग के बाद बाबा के सामने हमें पक्का करना है, रिवाइज करना है कि मुझे आपके जैसा बनना है, मुझे सम्पूर्ण बनना है, मुझे पास विधु ऑनर बनना है, मुझे विनाश के पहले कर्माती बनना है। यह अपने आप में दृढ़ करना है। फिर खुद को हम देखते हैं कि बाबा की हम सब बच्चों को सबसे बड़ी देन है सम्पूर्ण बनने का ज्ञान, समझ, मार्गदर्शन। भक्ति में लगन थी तो देखो घरबार छोड़कर, सन्यास लेकर जंगलों में जाकर तप करते थे। कितना कष्ट सहा उन्होंने। उनको जो गुरु मिले, जिस गुरु ने

कौन-से ब्राह्मण जीवन में आनंद आएगा, सुख महसूस होगा, जो निर्विघ्न, निरोगी होगा। बार-बार माया से युद्ध चले क्योंकि खुद में जब माया आती है तभी विघ्न आता है। जो भी विघ्न आते हैं हमारी अपनी कमी-कमजोरी के कारण आते हैं। जहाँ शक्ति है वहाँ वह परिस्थिति विघ्न नहीं लगती। क्योंकि शक्ति है तो हम उसको पार कर देते हैं। कोई लड़ने आ रहा है पर हमारे में भी पॉवर है तो हम कहेंगे आने दो हम भी तैयार हैं, फिर डरते नहीं हैं।

तो इस पवित्र योगी जीवन में हमें ऐसी पॉवर से चलना है कि उसमें कोई विघ्न न रहे माना कोई भी परिस्थिति हमारी खुशी को, आनंद

को, हमारी अवस्था को बिगाड़ ना सके। तो सबसे पहले आवश्यक है दिव्य बुद्धि जो बाबा के सद्ज्ञान से हमें प्राप्त होती है। सद्ज्ञान से सद्मति आती है और सद्मति से सद्गति होती है। बुद्धि सदा शुद्ध रहे, सत्य रहे क्योंकि जीवन में हमें बहुत छोटी-छोटी सी बातों से लेकर हर कदम में निर्णय करने होते हैं। यह सोचना नहीं सोचना, यह करना नहीं करना, यह बोलना नहीं बोलना, यह खाना नहीं खाना, यह देखना नहीं देखना हर कदम निर्णय लेने होते हैं। वहाँ हमारी दिव्य बुद्धि किस प्रकार की है सही निर्णय सही कर्म सुख का आधार है। आज बाबा का सत्य ज्ञान मिला, तीसरा नेत्र मिला हम आत्माओं में जागृति आई, अवेयरनेस आई। बाबा ने कहा है ना कि ज्ञान से रोशनी मिलती है। बुद्धि कहाँ भी जाती है हम समझ सकते हैं, क्या राइट है क्या रॉन्ग है, क्या हमें करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए।

तो देखो जीवन बदल गया वरना हमारा जीवन देहभान में, विकारों में, व्यर्थ में, दुनियावी बातों में, इंद्रिय रसों में इन्हीं बातों में चल रहा था। हम इस दुनिया की, इस जीवन की बातें सोचते रहते थे पर जैसे ही बाबा के सत्य ज्ञान से बुद्धि जागी, सत्य बनी तो हमारा नया जन्म हुआ। अब हम सिर्फ लौकिक, दैहिक, भौतिक बातों के लिए नहीं जी रहे हैं, अब हमारा जीवन आत्म कल्याण के लिए और विश्व कल्याण के लिए सेवा भी कर रहा है।



भोपाल-म.प्र. माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात कर आध्यात्मिक चर्चा करते हुए माउण्ट आबू से वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. नीता दीदी, डायरेक्टर, सुख शांति भवन मेडिटेशन रिट्रीट सेंटर नीलबाद, भोपाल, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. राम कुमार भाई, ब्र.कु. नारायण भाई एवं ब्र.कु. सुरेश गुप्ता भाई।



पोरसा-म.प्र. ब्रह्माकुमारीज पाठशाला रामनगर मुरैना में मीडिया प्रभाग के द्वारा पत्रकारों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में शॉल तथा ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. कृष्णा बहन। इस अवसर पर रजनीश दुबे, ब्यूरो चीफ दैनिक भास्कर, रविंद्र कुशवाहा, पत्रिका ब्यूरो चीफ, गोपाल सिकरवार, हिंदुस्तान एक्सप्रेस ब्यूरो चीफ, प्रकाश डंडोतिया, ब्यूरो चीफ नवभारत, धर्मेन्द्र सिंह, श्योपुर एक्सप्रेस, हाकिम सिंह नंदा, दैनिक चंबल सुखी ब्यूरो चीफ, अमन सक्सेना, पंजाब केसरी टीवी, योगेश पाराशर, टीवी 27 न्यूज चैनल, देवेन्द्र सिंह राजपूत, न्यूज वर्ल्ड चैनल, हरिओम गौड़, नई दुनिया ब्यूरो चीफ, अवधेश दंडोतिया, राज एक्सप्रेस ब्यूरो चीफ, श्रीनिवास शर्मा, अजय भारत ब्यूरो चीफ, हरिओम शर्मा, आचरण न्यूज, मनोज सिंह तोमर, सुदर्शन एक्सप्रेस, घनश्याम डंडोतिया, स्वदेश न्यूज, करतार सिंह राजपूत, जी न्यूज चैनल, समाजसेविका हेमा अग्रवाल, ब्र.कु. निकेता बहन, ब्र.कु. प्रियंका बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



गोवा-काणकोण। क्रिश्चियन धर्म के विविधा कमर्शियल इंस्टीट्यूट के प्रिंसिपल सुकुर फर्नांडिस द्वारा 34 साल से आयोजित किये जाने वाले सर्वधर्म प्रार्थना शांति यात्रा में प्रवचन करने के लिए आमंत्रित किये जाने पर शामिल हुई ब्रह्माकुमारी बहन व अन्य धर्म प्रतिनिधि।



पन्ना-म.प्र. आर.पी.मिश्र, जेल अधीक्षक को संस्था की गतिविधियों से अवगत कराने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए स्थानीय उपसेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन।



मण्डलेश्वर-म.प्र. भागवत कथाकार चेतना भारती को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मंगला बहन।



ग्वालियर-लक्ष्कर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के चिकित्सा सेवा प्रभाग द्वारा 'मेरा ग्वालियर' व्यसन मुक्त ग्वालियर अभियान के अंतर्गत सीआरपीएफ के जवानों एवं उनके परिवारों को व्यसन मुक्ति एवं तनाव मुक्ति के बारे में जानकारी देने के पश्चात् समूह चित्र में उपस्थित हैं ब्र.कु. डॉ. गोमती बहन एवं स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श दीदी। इसके साथ ही अभियान के अंतर्गत संस्थान द्वारा हजीरा पुलिस थाना एवं किला गेट पुलिस थाना सहित विभिन्न विद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किये गये जिसमें डॉ. भारती, ब्र.कु. रंजू बहन आदि शामिल रहे।



जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। शिव स्मृति भवन में 'राष्ट्रीय किसान दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं डॉ. एस.बी. दास कोट शास्त्र विभागाध्यक्ष जवाहरलाल कृषि विश्वविद्यालय, के.के. अग्रवाल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भारत कृषक समाज, रूपेंद्र पटेल सचिव भारत कृषक समाज, डॉ. एस.के. पांडे, स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. भावना बहन तथा ब्र.कु. वर्षा बहन। कार्यक्रम में उपस्थित रहे ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. संदीप तथा अन्य।



जोबट-म.प्र. गायत्री विद्या पीठ, जोबट में 'विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा का महत्त्व' विषय पर सम्बोधित करते हुए तनाव मुक्ति विशेषज्ञा ब्र.कु. प्रिया बहन। बड़ी संख्या में ध्यानपूर्वक सुनते हुए विद्यार्थीगण।



रायपुर-छत्तीसगढ़। शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर में क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् विधानसभा अध्यक्ष डॉ. चरण दास महंत, पूर्व लोकयुक्त एवं विधि आयोग के सचिव रहे न्यायमूर्ति लालचन्द भादू, गृह सचिव (आईपीएस) अरूण देव गौतम, पूर्व मंत्री राजेश मूणत, पं. रविशंकर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. केशरी लाल वर्मा, एडीशनल चीफ राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक राजयोगिनी ब्र.कु. हेमा दीदी, प्रयागराज से धार्मिक सेवा प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी। इस दौरान उपस्थित रहे कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार वि.वि.के कुलपति प्रो. बलदेव शर्मा, एडीशनल कलेक्टर उज्जवल पोरवाल, नगर विधायक कुलदीप जुनेजा, पूर्व मंत्री चन्द्रशेखर साहू, पूर्व विधायक गुरुमुख सिंह होरा, सूचना आयुक्त अशोक अग्रवाल, डॉ. देवेन्द्र नायक, ब्र.कु. आशा बहन, भिलाई, लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष (आईएएस) आर.एस. विश्वकर्मा, समाजसेविका शताब्दि पाण्डे, भाजपा नेता श्रीचन्द्र सुन्दरानी, संजय श्रीवास्तव, मुख्यमंत्री के पूर्व विधि सलाहकार मनीष त्यागी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



जबलपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज के ज्ञान संजीवनी भवन में आयोजित 'योग तपस्या भट्टी' में ब्र.कु. शक्ति, माउण्ट आबू ने राजयोग से हीलिंग करने की विधि द्वारा शक्तिशाली योग की अनुभूति करने के पश्चात् समूह चित्र में साथ हैं ब्र.कु. बहनें। कार्यक्रम का लाभ लगभग 1000 से अधिक ब्र.कु. भाई-बहनों ने लिया।



पुणे-महाराष्ट्र। डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर सांस्कृतिक भवन में 'स्वर्णिम संस्कृति से स्वर्णिम संसार' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पदमश्री पं. सुरेश तळवलकर जी, तालयोगी, तबलावादक, मेघराज राजे भोसले, अध्यक्ष आखिल भारतीय मराठी चित्रपट महामंडळ, राजेश दातार, गायक शास्त्रीय संगीत, मिलिंद तुळ्यकर, जलतरंग वादक, पणिकुमार लालगुनकर, गायक, ब्र.कु. सतीश, राष्ट्रीय संयोजक कला सांस्कृतिक प्रभाग, माउण्ट आबू, ब्र.कु. रोहिणी बहन। कार्यक्रम में उपस्थित रहे जितेन्द्र भुरूक, गायक, डॉ. सुषमा लाड, मुकेश लालगुनकर, ब्र.कु. हर्षदा शिंदे तथा ब्र.कु. विनायक।



कटनी-सिविल लाइन (म.प्र.)। बाल दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में बच्चों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, प्रसिद्ध एडवर्टाईज़र अमित दुबे, महिला मंडल अधिकारी लक्ष्मी जायसवाल तथा अन्य।



छुरा-छ.ग.। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डॉ. डी.के. साहू, प्राचार्य, कचना महाविद्यालय। साथ में हैं ब्र.कु. नारायण भाई, ईंदौर, प्राचार्य मकसूदन जी, व्याख्याता जोहंत राम, सरपंच नीरा बहन, ब्र.कु. अंशु बहन, ब्र.कु. प्रिया बहन तथा अन्य।

राजयोग से असंभव हुआ संभव

2003 में ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्व विद्यालय से मेरा संपर्क ऐसे समय पर हुआ, जब मैं जीवन से बिल्कुल निराश हो गई थी। उस वक्त मैं एक ऑगनवाड़ी शिक्षिका, ग्राम पंचायत सदस्य, महिला को-ऑपरेटिव सोसाइटी डायरेक्टर, गाँव-गाँव में महिला बचत गट स्थापन कर उनको अपने पैरों पर खड़ा करना, महिला परिषद जैसे सरकारी क्षेत्र की मदद से महिलाओं को अत्याचार से छुड़ाना, उनके पतियों को, बच्चों को नशा

ने जमीन पर बैठकर मेरे दोनों पैर पकड़कर, आँखों से आंसू बहाते न जाने की विनती की, तो यह विचार भी बदल दिया।

शराब छुड़ाने के लिए उन्हें डॉक्टर की दवाइयाँ दी, किसी महिला के शरीर में आने वाली देवी से भोजन में राख खिलाई, मुम्बई के मंदिर में मुर्गे की बली चढ़ाई, तीन महीने व्यसन मुक्ति केंद्र में भी भर्ती करवाया फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ।

मैंने ब्रह्माकुमारी विद्यालय में सात रोज एक घंटे का राजयोग मेडिटेशन का कोर्स किया, उसमें मैंने आत्म शक्ति, परमात्म शक्ति और कर्मों की गुहा गति को जाना। भगवान को याद कर सिर्फ संकल्प शक्ति से दूसरों को शक्तिशाली बनाने की विधि मैंने सीख ली। इसका प्रयोग अपने पति पर करना शुरू कर दिया।

रोज सवेरे चार बजे जब

ब्र.कु. दर्शना बहन, मापुसा, गोवा

अनुभव

मुक्ति केंद्र से व्यसन मुक्त बनाना। इस तरह के समाज सेवा के कार्य में सदा व्यस्त रहते हुए भी खुद के शराबी पति के आगे बिल्कुल लाचार थी।

उनके व्यसनी होने से उनको अपने कार्यस्थल से निकाल दिया था। तीन छोटे बच्चों की जिम्मेवारी मुझ पर छोड़कर वो अपनी शराबी दुनिया में मस्त रहते थे। न परिवार की चिंता, न भविष्य की चिंता, न समाज की परवाह! रोज-रोज गाली-गलौच करना, कभी रास्ते में गिरना, कभी गाड़ी से गिरना, कभी पंचायत कार्य हेतु घर में आये सभा में मुख्यमंत्री या अन्य महानुभावों का भी शराब पीकर अपमान करना। इस तरह के उनके गैर जिम्मेवार आचरण से सारा

परिवार भयंकर परेशान था। उनके खुद के माँ-बाप के साथ मेरे मुख से या बच्चों के मुख से यही आता कि "ये मर जाता तो बहुत अच्छा होता।"

उन्होंने अपनी नाराज़गी दिखाने के लिए कई बार अपने बालों को नोच-नोच कर तोड़ दिया। क्रोध में आकर मेरे मुँह पर फेंके, पगार को आग लगा दी। कभी बच्चों ने उनकी मार-पीट की। एक बार तो क्रोधवश रोटी का पलटा गैस पर लाल-लाल करके उनकी छाती को जला दिया! परेशान होकर मैंने दो बार आत्महत्या का भी प्रयास किया, लेकिन बच्चों के बारे में सोचकर विचार बदल दिया। एक बार बच्चों को लेकर हमेशा के लिए घर छोड़ देने का निर्णय लिया, लेकिन जब ससुर जी

मनुष्य गहरी नींद में होते भी उनका अंतर्मन जागृत होने से, उसके बारे में हम जो भी संकल्प करते हैं वो उनके मन-बुद्धि तक पहुँचते हैं और रोज-रोज ऐसा करने से मनुष्य वैसा ही व्यवहार करने लगता है।

अब रोज सवेरे वो जहाँ भी सोते थे, वहाँ मन-बुद्धि से उनका चित्र देखकर, उनके मस्तक में बिंदु स्वरूप आत्मा को देखकर संकल्प देना शुरू किया।

कॉमेंट्री-

देखो मैं एक ज्योति बिन्दु आत्मा हूँ, वैसे ही तुम भी एक आत्मा हो... देखो अपने मस्तक में... जैसे मैं परमात्मा का बच्चा हूँ... परमधाम से इस दुनिया में उतरे हैं... तुम भी परमात्मा के

बच्चे हो... इस देह से बिल्कुल अलग हो, एक चैतन्य शक्ति हो... मुझे पता है कि सृष्टि के रंगमंच पर जन्म-मरण के चक्र में आते मैंने किसी जन्म तुम्हें बहुत सताया था, दुःख दिया था, इसलिए अब तुम मुझे सता रहे हो... हे आत्मा मैं आपसे क्षमा माँगती हूँ... मुझे माफ कर दो... मैं भी तुम्हें माफ कर देती हूँ। अब जल्दी जागो, उठो... चलो हम घर को स्वर्ग बनायें... परमात्म छत्रछाया से जीवन को खुशहाल बनायें।

ऐसे संकल्प भेजते हुए मैं अनुभव करती थी कि जैसे उनके मस्तक पर भगवान की शक्तिशाली किरणें फैल रही हैं... पिता परमात्मा से आ रही प्रेम की, सुख-शांति की, पवित्रता की किरणों से वो भरपूर हो रहे हैं... दया-करुणा के सागर अपने पिता से मिलकर वो तृप्त हो रहे हैं... इस तरह करीबन तीन महीने गुजर गए। उनके संस्कारों में थोड़ा-सा परिवर्तन

दिखने लगा, तो मैंने भी हिम्मत कर एक दिन धीरे से पूछा "क्या आप सात दिन का कोर्स करेंगे?" उन्होंने तुरंत धीमी आवाज़ में हाँ बोला। कहते हैं ना कि बीज बोने से पहले धरनी को तैयार करो। तो रोज के प्रयोग से उनके जीवन रूपी धरनी पर शुद्ध संकल्पों के बीज असर कर गए।

बस! फिर तो क्या कमाल हो गई! जिस दिन से उन्होंने कोर्स शुरू किया, उसी दिन से शराब पीना बंद हो गया। अन्न का शुद्धिकरण होता गया। कहते हैं ना, "जैसा अन्न वैसा मन"। संस्कार तो ऐसे बदल गए कि उनके मित्र-परिवार सब दंग रह गये। इस राजयोग का, इस विद्यालय का लक्ष्य ही है मनुष्य को देवता समान खुशी देने वाला बनाना।

आज वो हमारे घर के सामने जो गीता पाठशाला है उसमें आने वालों को ज़रूरत पड़ने पर जीवन को पलटाने वाले ईश्वरीय महावाक्य सुनाते हैं। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के ईश्वरीय कार्य में हर समय मददगार बनकर रहते हैं। आज हर कोई उनका सम्मान करता है।

भगवान उन्हें लंबी आयु दे। सदा खुश रहें! भगवान से रिश्ता जोड़ें, तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है। बस, जैसे मेरा घर नर्क से स्वर्ग बना वैसे ही राजयोग के अभ्यास से घर-घर स्वर्ग बन जाए। इसी शुभकामना के साथ विराम देती हूँ।



ओआरसी-गुरुग्राम। ओआरसी में दिल्ली ज़ोन की टीचर्स बहनों के लिए आयोजित 'दो दिवसीय अकाउंट ट्रेनिंग' में मा.आबू से ब्र.कु. मानसी बहन, ब्र.कु. योगेश भाई व ब्र.कु. संदीप भाई ने सभी को ट्रेनिंग कराई। इस ट्रेनिंग में संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. ईशु बहन सहित 90 सेंटर से करीब 200 ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल हुए।

शरीर की इम्युनिटी के साथ मन की इम्युनिटी भी बढ़ाएं

इम्युनिटी कैसे बढ़ाते हैं? किसी भी डॉक्टर के पास जाएं और बोलें कि इम्युनिटी बढ़ानी है तो सबसे पहले वह खुराक के बारे में बात करेंगे। पृच्छेंगे आपकी डाइट कैसी है? आत्मा की इम्युनिटी बढ़ाने के लिए भी सही खुराक चाहिए। मतलब आत्मा को क्या ग्रहण करना है और क्या ग्रहण नहीं करना है, इसके लिए भी वक्त निकालना जरूरी है।

जब हवा में भी डर और चिंता है, घर की हवा में भी वही है, तब उसका प्रभाव हम पर न पड़े, ऐसा नहीं हो सकता। इसलिए हमारी अंतरात्मा की इम्युनिटी स्ट्रॉन्ग नहीं, परफेक्ट होनी चाहिए। ये भी एक महामारी है। एक मिनट के लिए भी मास्क उतारो तो पता नहीं चलेगा और 'संक्रमण' हो जाएगा। मतलब थोड़ा-सा भी ध्यान छोड़ा, पुरुषार्थ में थोड़ा-पकड़ लेगा। ऐसे में अपने सारे दिन की विचार-प्रक्रिया में देखना पड़ेगा कि मेरी सोच में कौन-सा इन्फेक्शन है, जिसकी सफाई करने की जरूरत है। टॉक्सिन यानी विषाक्त पदार्थ जैसे शरीर में बढ़ते हैं, वैसे ही ये दिमाग में भी कई गुना बढ़ते रहते हैं। जब शुरू-शुरू में बढ़ते हैं तो पता नहीं चलता कि वो टॉक्सिन हैं। शरीर के टॉक्सिन कभी पता नहीं चलते, लेकिन वो बढ़ते-बढ़ते बीमारी का रूप ले लेते हैं।

जब हम सुबह-सुबह दिन की शुरुआत आध्यात्मिक ज्ञान से करते हैं तो यही है हमारी खुराक। अगर मुझे अपनी शक्ति को बढ़ाना है तो मुझे अपने दिन की शुरुआत आध्यात्मिक ज्ञान से



ब्र.कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

करनी होगी। अब वो समय चला गया, जब हम अपने आपसे कहते हैं कि इसके लिए मेरे पास टाइम नहीं है। अब जिसने भी अपने आपको कहा

एक मिनट के लिए भी मास्क उतारो तो पता नहीं चलेगा और 'संक्रमण' हो जाएगा। मतलब थोड़ा-सा भी ध्यान छोड़ा पुरुषार्थ में तो थोड़ा-पकड़ लेगा।

कि मेरे पास टाइम नहीं है, उन्हें उस दिन की तारीख नोट करके रखनी चाहिए कि मैंने आज अपने आपको कहा कि मेरे पास खुद की शक्ति बढ़ाने के लिए टाइम नहीं है। और फिर बाद में

जब लगेगा तो वो तारीख देखिएगा कि अगर मैंने खुद पर काम किया होता तो मेरी शक्ति अब तक कितनी बढ़ गई होती।

लोगों को लगता है कि हम जितना ज्यादा समय बच्चों के साथ बिताएंगे, उनको उतनी अच्छी परवरिश मिलेगी। सोचिए अगर इतनी अच्छी परवरिश मिल रही होती तो फिर आज बच्चों में मानसिक बीमारियां क्यों बढ़ रही होती? बच्चों को समय दें, यह बहुत जरूरी है, लेकिन देखें कि उस समय में उन्हें शक्ति कौन-सी मिल रही है। उनके लिए अगर हम वक्त निकालते हैं और जाकर आत्मा रूपी बैटरी को चार्ज करते हैं तो उसका सबसे पहला फायदा किसको मिलेगा? जो घर में रहते हैं, उनको। उससे भी सबसे ज्यादा बेनिफिट किसको मिलेगा- बच्चों को मिलेगा। क्योंकि बच्चों का जो संग है, अभी एक तो है फोन और दूसरा टीवी। ऊपर से साथ में जो बच्चे हैं उनकी बैटरी कैसी है- उनके आसपास का संग चार्ज है, नहीं है। तो अब आप कल्पना करो कि आपका बच्चा, उसकी बैटरी 50 प्रतिशत पर है लेकिन उसके आसपास का जो संग है, वो और भी कम है। कम की बैटरी से बैटरी कनेक्ट कर दी तो उसकी बैटरी भी डाउन हो जाएगी। हर बच्चे को आज एक ही चीज की जरूरत है और वो है जितनी छोटी आयु से उनकी बैटरी को चार्ज करेंगे, उतना ही उनके लिए अच्छा होगा। इसके लिए मन की इम्युनिटी बढ़ाएं।



अहमदनगर-महा।। सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सनी देओल से डॉ. ब्र.कु. दीपक हस्के ने मुलाकात कर राजयोग मेडिटेशन से अवगत कराकर मुख्यालय माउण्ट आबू आने का निमंत्रण दिया। इस दौरान ब्र.कु. विहान भाई उपस्थित रहे।



गंज बासोदा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज द्वारा नवयुग प्रवर्तक एवं मानवता के अद्भुत शिल्पकार प्रजापिता ब्रह्मा बाबा(दादा लेखराज) की 146वीं जयंती को आध्यात्मिक सशक्तिकरण दिवस के रूप में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए जैन समाज से समाज सेविका नीतू जैन, सरपंच श्याम देवी, रघुवंशी महिला मंडल अध्यक्ष सीमा रघुवंशी, ब्र.कु. रेखा बहन एवं ब्र.कु. रुक्मणी बहन।



पन्ना-म.प्र.। 'राष्ट्रीय किसान दिवस' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए धीरेन्द्र सिंह बुंदेला, सरपंच, वीरेंद्र सिंह, पूर्व सरपंच, विशाल सिंह, जसवंतपुरा, उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन तथा अन्य।



मॉस्को-रशिया। ब्रह्माकुमारीज द्वारा भारत की आजादी के अमृत महोत्सव के तहत 'द पावर ऑफ ट्रांसफॉर्मेशन' उत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राकेश कुमार, प्रोग्राम ऑफिसर, जवाहरलाल नेहरू कल्चरल सेंटर, गैलिन्या पाचेको-रेनागा, डायरेक्टर ऑफ द सेंटर ऑफ सोशल हेल्थ टू फैमिली एंड चिल्ड्रेन 'वोस्तोचनॉय डेगौनिनो', ल्युबोव गोर्डिना, डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी, द ऑनर्ड कल्चरल वर्कर ऑफ रशिया, राजयोगिनी ब्र.कु. सुधा दीदी, द डायरेक्टर ऑफ द ब्रह्माकुमारीज सेंटर, रशिया, ब्र.कु. विजय बहन तथा अन्य गणमान्य।

बादशाहत दुनिया में किसकी है, जिसको डर नहीं है। कुछ भी खोने का डर हमको गुलाम बनाता है। चाहे वो छोटी-सी चीज

पल फिकर, चिंता में जी रहा है। आज ऐसा नहीं है कि घर, गाड़ी, पैसा आदि की जरूरत नहीं है, जरूरत है, लेकिन सिर्फ

चिंता हमें हर पल जला रही है। जब तक हम जी रहे हैं, तब तक चीजों को सुरक्षित रखना हमारी जिम्मेवारी है, लेकिन उन

कि पापा ने मेरे लिए ये किया, वो किया, मेरे हर चीज का ध्यान दिया, पढ़ाया-लिखाया, तो मैं फ्री होकर तो नहीं जी पा रहा हूँ इसी बोझ में कि मुझे भी सब

इसका कोई तो समाधान निकले, कोई तो सिक्योरिटी हो। आपको फिकर होना लाजमी है लेकिन कोई ऐसी निश्चिंतता चाहिए जो हमको इससे निकाल दे। वो है परमात्मा का साथ और उसपर सम्पूर्ण विश्वास। परमात्मा हमसे हर दिन कहते हैं, जो 'मेरा' है उसे 'तेरा' कर दो। मतलब ये सबकुछ परमात्मा का दिया हुआ है मेरे पास, मुझे इसका प्रयोग करना है और भूल जाना है। बस इसे अभ्यास में लाओ तो बेफिक्री आयेगी। दुनिया में लोग कहते हैं, आप घर के ट्रस्टी बनें, परिवार के ट्रस्टी बनें, माना सम्भालो लेकिन अटको नहीं। ऐसे ही परमात्मा कहते हैं, मुझे अपनी सारी चिंता, फिकर, दुःख-दर्द दे दो और मेरे से रूहानियत, रूहानी नशा, ईश्वरीय खुमारी ले लो।

बस यही अभ्यास हमें जिंदा रख पायेगा और हम इस जीवन में रहकर के, सबके साथ चलकर के अच्छे से जीवन जी सकते हैं। नहीं तो हर पल, हर क्षण हमारा व्यर्थ चिंतन और चिंता में बीत रहा है। इसलिए जितने भी संकल्प करो, उसमें बार-बार यही डालो कि मेरे पास जो भी है वो परमात्मा का है, उसी ने हमें दिया है उपयोग के लिए, ये उसी का है, ये अभ्यास निरंतर हमारी बुद्धि में चलेगा तो हम हल्के हो जायेंगे। इसलिए फिकर से फारिग होने के लिए अपने को इस अभ्यास के अंदर डाल दो बिना देरी किये।

फिकर से फारिग कैसे हों?

हो या बड़ी चीज हो। परमात्मा के बहुत ही अलौकिक भाव हैं, वे हर बात को अलौकिक तरीके से समझाते हैं। लेकिन अगर इसको सामान्य भाषा में समझें तो कह सकते हैं कि छोटी-छोटी बातों से लगाव हमारे डर को बढ़ा रहा है। हमको गुलाम बना रहा है। इसीलिए दिन-रात हमारा फिकर, चिंता, उदासी में बीतता है। जैसे हमने कोई चीज खरीदी और वही चीज हमें खुद को प्रयोग में अगर लानी है तो उसे हम कितना सलीके से उपयोग में लाते हैं, क्योंकि उससे हमें मोह है, अटैचमेंट है। वहीं अगर हमें बाहर कहीं किसी की कुछ चीज यूज करनी है तो हम बेपरवाह हो जाते हैं। क्यों, क्योंकि वो 'मेरी' नहीं है। तो जहाँ मेरापन है, वहाँ पर हर पल तकलीफ है, बचाव है, अलगाव है, तनाव है। क्यों है, क्योंकि 'मेरा' है।

समाज का हर एक नागरिक वैसे तो स्वतंत्र है, लेकिन स्वयं के मामले में और चीजों के मामले में परतंत्र है, इसलिए हर

प्रयोग करने के लिए। किसी शायर ने एक बहुत सुंदर बात कही, 'आप मकान में इसलिए नहीं रहो कि ये मकान मेरा है, आप मकान में इसलिए रहो कि आपने इसे खरीदा है'। माना, कुछ दिन के लिए। आज का जो समय है, उसे आप एक विटनेस(साक्षी या गवाह) बनकर देखो, तो आप पायेंगे कि सभी के निराश और उदास होने का मात्र एक कारण है, वो है, जो हमारे शरीर से स्थूल चीजें जुड़ी हुई हैं उन चीजों के साथ हमारा गहरा लगाव। हर कोई छुपा-छुपा के हर चीज कर रहा है। अगर आप इसका प्रैक्टिकल देखना चाहते हैं, तो कोई अगर बैंक जा रहा है और आप उससे पूछ लो कि आप कहीं जा रहे हो तो कहेगा मंदिर जा रहा हूँ या कहीं और का नाम लेगा। लेकिन सच नहीं बतायेगा क्योंकि उसे डर है कि कोई जान न जाये कि हमारे पास कितना धन है। हर समय इस बात को लेकर कि कोई कुछ हमारे बारे में न जान जाये, इसको छुपाने की भी एक



चीजों को आरक्षित करके सभी को बार-बार घर में कहना कि तुम्हारे लिए मैं सुबह से शाम तक काम पर जाता हूँ, तुम्हारे लिए मैं ये करता हूँ, तुम्हारे लिए मैंने सब जमा करके रखा है। तो व्यक्ति को बांधने के लिए मनुष्य एक तरह से लोभ की वृत्ति का प्रयोग कर रहा है जो कि असंभव है। वो भी बिचारा अंदर से सांस नहीं ले पा रहा है

कुछ करना है। वो इस आधार से, भावनात्मक रूप से जी रहा है।

तो हम सबके जीवन को चलाने के लिए, खुश रखने के लिए या फ्री रखने के लिए खर्च कर रहे हैं या बाद में उससे सबकुछ वापिस लेने के लिए या बंधनों में जकड़ने के लिए कर रहे हैं! तो कहीं से भी हम निश्चित नहीं हो पा रहे हैं। तो

परमात्म ऊर्जा

कथा सरिता

एक राहुल नाम का व्यक्ति था। स्वभाव से बहुत ही गंभीर था। उसकी पढ़ाई पूरी हो चुकी थी, लेकिन कोई नौकरी नहीं थी। दिन-रात वो काम की तलाश में इधर-उधर भटकता रहता था। राहुल एक ईमानदार मनुष्य भी था इसलिए भी उसे काम मिलने में मुश्किल आ रही थी। दिन इतने खराब हो चुके थे कि उसे मजदूरी करनी पड़ी। रोजी रोटी के लिए उसके पास अब कोई विकल्प नहीं था। राहुल पढ़ा लिखा था जो उसके व्यवहार से साफ जाहिर होता था।

एक दिन एक सेठ के घर राहुल मजदूरी कर रहा था। सेठ का ध्यान राहुल के ऊपर ही था। सेठ को समझ आ रहा था कि राहुल एक पढ़ा-लिखा समझदार लड़का है, लेकिन परिस्थिति वश उसे ऐसे मजदूरी का काम करना पड़ रहा है। सेठ को अपने एक विशेष काम के लिए एक ईमानदार व्यक्ति की जरूरत थी। उसने राहुल की परीक्षा लेने की सोची।

उसने एक दिन राहुल को अपने पास बुलाया और उसे पचास हजार रुपये दिए जिसमें सो-सो के नोट थे और कहा भाई

तुम ईमानदार लगते हो ये पैसे मेरे एक व्यापारी को दे आओ। राहुल ने ईमानदारी से पैसे पढ़ा दिए।

दूसरे दिन, व्यापारी ने राहुल को फिर से पैसे दिए इस बार उसने राहुल को बिना गिने पैसे दिए कहा खुद ही गिन लो और

न कहने पर राहुल की हिम्मत बढ़ गयी। उसने रोजाना चोरी करनी शुरू कर दी।

सेठ को उम्मीद थी कि राहुल उसे सच बोलेगा लेकिन राहुल ने नहीं बोला। एक दिन सेठ ने राहुल को काम से निकाल दिया। वास्तव में सेठ अपने जीवन का एक सहारा ढूँढ रहा था। उसकी कोई संतान नहीं थी। राहुल को भोला-भाला जानकर उसने उसकी परीक्षा लेने की सोची थी। अगर राहुल सच बोलता तो सेठ उसे अपनी दुकान सौंप देता।

जब राहुल को इस बात का पता चला है तो उसे बहुत दुःख हुआ और उसने स्वीकारा कि कैसी भी परिस्थिति हो ईमानदारी ही सर्वोच्च नीति होती है।

शिक्षा: कैसा भी मुकाम आये व्यक्ति को लेकिन ईमानदारी का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। ईमानदारी जीवन की वो कमाई है जो मुश्किल है लेकिन कभी गलत अंत नहीं देती।

सदैव जो कोई भी कर्तव्य करते हो व मुख से शब्द वर्णन करते हो तो पहले चेक करो कि रहम और रूहाब- दोनों समान रूप में हैं? दोनों को समान करने से एक तो अपना स्वमान स्वयं रख सकेंगे, दूसरा सर्व आत्माओं से भी स्वमान की प्राप्ति होगी। स्वमान को छोड़ मान की इच्छा रखने से सफलता नहीं हो पाती है। मान की इच्छा को छोड़ स्वमान में टिक जाओ तो मान परछाई के समान आपके पिछाड़ी में आयेगा। जैसे भक्त अपने देवताओं व देवियों के पीछे अन्धश्रद्धा वश भी कितनी भागदौड़ करते हैं। वैसे चैतन्य स्वरूप में स्थित हुई आत्माओं के पीछे सर्व आत्माएं मान देने के लिए आयेंगी, दौड़ेंगी। भक्तों की भागदौड़ देखी है? आप लोगों के यादगार जड़ चित्र हैं। उनमें भी चित्रकार मुख्य यही धारणा भरते हैं- एक तरफ शक्तियों का रूहाब भी फुल फोर्स में दिखाते हैं और साथ-साथ रहम का भी दिखाते हैं। एक ही चित्र में दोनों ही भाव प्रकट करते हैं ना! यह क्यों बना है? क्योंकि प्रैक्टिकल में आप रूहाब और रहमदिल मूर्त बने हो। तो जड़ चित्रों में भी यही मुख्य धारणाएं दिखाते हैं। तो आप लोग अभी जब सर्विस पर हो तो सर्विस के प्रत्यक्षफल का आधार इन दो मुख्य धारणाओं के ऊपर है। रहमदिल जरूर बनना है, लेकिन किस आधार पर और कब? यह भी देखना है। रूहाब रखना जरूर है, लेकिन कैसे और किस तरीके से प्रत्यक्ष करना है, यह भी देखना है। रूहाब कोई वर्णन करने व दिखाने से दिखाई नहीं देता, रूहाब नैन-चैन से स्वयं ही अपना साक्षात्कार कराता है। अगर उसका वर्णन करते हैं तो रूहाब बदलकर रोब में दिखाई देता है। तो रोब नहीं दिखाना है, रूहाब में रहना है।

रोब को भी अहंकार व क्रोध की वशावली कहेंगे। इसलिए रोब नहीं दिखाना है, लेकिन रूहाब में जरूर रहना है। जितना-जितना रहमदिल के साथ रूहाब में रहेंगे तो फिर रोब खत्म हो ही

जायेगा। कोई कैसी भी आत्मा हो, रोब दिलाने वाला भी हो, तो रूहाब और रहमदिल बनने से रोब में कभी नहीं आयेंगे। ऐसे नहीं कि सरकारमस्तान्सेज ऐसे थे व ऐसे शब्द बोले तो यह करना ही पड़ा। करना ही पड़ेगा, यह तो होगा ही, अभी तो सम्पूर्ण बने ही नहीं हैं- यह शब्द अथवा भाषा इस संगठन में नहीं होनी चाहिए। क्योंकि आप निमित्त सर्विस के हो इसलिए इस संगठन को मास्टर नॉलेजफुल और सर्विसएबुल, सक्सेसफुल संगठन कहेंगे। जो सक्सेसफुल हैं वह कोई कारण नहीं बनाते। वह कारण को निवारण में परिवर्तन कर देते हैं। कारण को आगे नहीं रखेंगे। जो मास्टर नॉलेजफुल, सक्सेसफुल होते हैं वह अपनी नॉलेज की शक्ति से कारण को निवारण में बदली कर देंगे, फिर कारण खत्म हो जायेगा। निमित्त बनने वालों को विशेष अपने हर संकल्प के ऊपर भी अटेन्शन रखना पड़े। क्योंकि निमित्त बनी हुई आत्माओं के ऊपर ही सभी की नजर होती है। अगर निमित्त बने हुए ही ऐसे-ऐसे कारण कहते चलते तो दूसरे जो आपको देख आगे बढ़ते हैं, वह आप को क्या उत्तर देंगे? इस कारण से हम आ नहीं सकते, चल नहीं सकते। जब स्वयं ही कारण बताने वाले हैं तो दूसरे के कारण को निवारण कैसे करेंगे? क्योंकि लोग सभी जानने वाले हो गये हैं। जैसे यहाँ दिन-प्रतिदिन नॉलेजफुल बनते जाते हो, वैसे ही दुनिया के लोग भी विज्ञान की शक्ति से, विज्ञान की रीति से नॉलेजफुल होते जाते हैं। वह आप लोगों के संकल्पों को भी मस्तक से, नयनों से, चेहरे से चेक कर लेते हैं। जैसे यहाँ ज्ञान की शक्ति भरती जाती है, वहाँ भी विज्ञान की शक्ति कम नहीं है। दोनों का फोर्स है। अगर निमित्त बनने वालों में कोई कमी है तो वह छिप नहीं सकते। इसलिए तुम निमित्त बनी हुई आत्माओं को इतना ही विशेष अपने संकल्प, वाणी और कर्म के ऊपर अटेन्शन रखना पड़े।

ईमानदारी ही सर्वश्रेष्ठ कमाई है

व्यापारी को दे आओ।

राहुल ने ईमानदारी से काम किया।

सेठ पहले से ही गल्ले में पैसे गिनकर रखता था पर

वो राहुल की ईमानदारी की

परीक्षा लेना चाहता था। रोज वो सेठ उसे पैसे

देने भेजता था। राहुल की माली हालत तो बहुत ही खराब थी। एक दिन

उसकी नियत डोल गयी और उसने सो रुपये चुरा लिए। जिसका पता सेठ को लग गया पर सेठ ने कुछ नहीं कहा। फिर से राहुल को रुपये देने भेजा। सेठ के कुछ

एक महान व्यक्ति थे ईश्वर चन्द्र। उनके जीवन में उनकी माता का बहुत बड़ा योगदान था। जब वे छोटे थे तब उनके घर के पास एक व्यक्ति बहुत गंभीर

था। वे दौड़ कर अपनी माँ के पास गये, लेकिन माँ के पास भी इलाज के लिए देने को कुछ नहीं था। तब माँ ने अपने आभूषण निकाल पुत्र के हाथों में

तुम्हें प्रिय भी हैं। तब ईश्वर की माँ ने उसे समझाया, यह आभूषण देह की शोभा बढ़ाते हैं लेकिन किसी जरूरतमंद के लिए किया गया कार्य, मन और आत्मा की शोभा बढ़ाता है। तू ये आभूषण ले जा एवं उस रोगी का उपचार कर। जब तू बड़ा होगा तब मुझे यह आभूषण बनवा देना।

कई सालों बाद, जब ईश्वर अपनी पहली कमाई लाया तब उसने अपने माँ के आभूषण बनवा दिए और कहा- माँ आज तेरा कर्ज पूरा हुआ। तब माँ ने कहा बेटा मेरा कर्ज जब पूरा होगा तब मुझे किसी जरूरतमंद के लिए आभूषण नहीं देने होंगे, संसार के सभी लोग संपन्न होंगे। तब ईश्वर ने अपनी माँ को वचन दिया, माँ अब से मेरा पूरा जीवन जरूरतमंदों के लिए समर्पित होगा। तब से ही ईश्वर ने अपना सम्पूर्ण जीवन दीन-दुखियों के लिए समर्पित किया और उनके कष्ट कम करने में बिता दिया।

शिक्षा: चरित्र का विकास बाल्यकाल की शिक्षा से ही होने लगता है। अतः सदैव अपने बच्चों को सही-गलत का पाठ सिखायें। जो वे बचपन में सीखते हैं उसी से उनका भविष्य बनता है।

चरित्र का विकास बाल्यकाल से ही होता है

हालत में पड़ा हुआ था। उसके पास ना खाने को पैसा था न ही अपने इलाज के लिए कुछ था। उस वक्त ईश्वर के पास उस गरीब की सहायता हेतु कुछ नहीं

रखे और कहा बेटा इन्हें बेचकर उस रोगी की मदद करो। तब पुत्र ने कहा, माँ ये आभूषण तो तुम्हारी माँ ने दिए थे। ये तुम पर बहुत अच्छे भी लगते हैं और



न्यू यॉर्क: ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त राष्ट्र कार्यालय में एकत्रित कई वैश्विक समुदायों की सेवा करने वाले लगभग 30 सदस्य 'रिमेम्बरिंग द टू सेल्फ एंड द सेक्रेड नेचर ऑफ सर्विस' विषय पर अपनी कहानियाँ, प्रेरणाओं और ज्ञान को साझा करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, हवा डायलो, चीफ ऑफ द सिविल सोसाइटी यूनिट एट द सिविल सोसाइटी एंड एडवोकेसी सेक्शन ऑफ द यूनाइटेड नेशन्स डिपार्टमेंट ऑफ ग्लोबल कम्यूनिकेशन्स, ऑडि कितागावा जेडी, प्रेसिडेंट/फाउंडर ऑफ द इंटरनेशनल एकेडमी फॉर मल्टीकल्चरल कोऑपरेशन, एज वेल एज द स्पिरिटुअल मदर ऑफ द लाइट ऑफ अवेयरनेस इंटरनेशनल स्पिरिटुअल फैमिली, कार्ल मुरेल्ल, प्रिंसिपल यूएन रीप्रेजेंटेटिव ऑफ द बहाइज ऑफिस ऑफ पब्लिक अफेयर्स, जूडी रॉजर्स तथा अन्य।

हिलना नहीं, खिलना है...

ब्र.कु. उर्वशी बहन, नई दिल्ली

हम बड़े नशे से कहते हैं कि बनाया प्रभु ने है अपना, दिया सुख हमें है कितना। ये कोई साधारण महावाक्य नहीं है और ये महावाक्य कोई ऐसे ही बोल भी नहीं सकता। तो वास्तव में हम कितने भाग्यवान ठहरे ना! देखो बिगड़ी को बनाने वाला अपना हो गया है तो फिर तो कोई हमारा कुछ बिगाड़ भी नहीं सकता है। फिर क्यों ये अजीब-सा डर, ये भय, ये चिंता? अरे! फिर परमात्म प्राप्ति का आपने

बच्चे, तुम्हारे सामने कभी पेपर नहीं आएंगे। बल्कि बाबा ने ये कहा है कि आने वाला समय बहुत भयानक होगा, चारों तरफ हाहाकार होगा, हर तरफ से पेपर आएंगे, क्योंकि ये समय ही हिसाब-किताब चुकू करने का है। अब बहुत आत्माएं हार्ट फेल हो जाती हैं बाबा के ये महावाक्य सुनकर, परन्तु वे ये क्यों नहीं याद रखती कि बाबा ने ये भी कहा है कि अंत समय में आपको मदद भी 100 गुना मिलेगी।

देखो बाबा के बच्चे हारेंगे तो जीतेगा कौन! रावण? सुना है क्या आपने पहले कभी कि भगवान की हार हुई और रावण की जीत हुई? और क्या महाभारत में भी कौरव जीते थे? भगवान की हार माना उनके बच्चों की हार, रावण की जीत माना बुराई, कमी, कमजोरी की जीत। हे प्यारी-मीठी आत्माओं, आप तो कल्प वृक्ष की जड़ हो, आप हिल जाओगे तो ये वृक्ष तो पूरा ही हिल जाएगा, इस वृक्ष की हर एक

आत्मा हलचल में आ जाएगी, उन सभी आत्माओं की सोचो, उन आत्माओं के पास तो बाबा भी नहीं है (माना उनको, बाबा की मदद की अनुभूति नहीं है) फिर उन आत्माओं को हिम्मत कौन देगा, उन सभी में बल कौन भरेगा? क्योंकि जब जड़ ही कमजोर होगी तो वृक्ष मजबूत कैसे होगा? कभी ऐसा तो नहीं देखा ना कि जड़ कमजोर है और वृक्ष मजबूत! इसलिए चिंतन करो इस महावाक्य पर कि तुम इस कल्प वृक्ष की जड़ में बैठी देव आत्माएं हो, तुम विचलित होंगे तो ये पूरा ही कल्प वृक्ष विचलित होगा। सोचो यह पूरा कल्प वृक्ष हम बच्चों पर आधारित

है, उन सभी आत्माओं के दुःख, अशांति का कारण भला हम क्यों बनें! नहीं, बल्कि भगवान ने हमें, उन सभी आत्माओं की सेवा के निमित्त चुना है इसलिए आज से हम ये प्रतिज्ञा करते हैं कि ना तो हम स्वयं हिलेंगे (चिंतन, दुःखी, अशांत, परेशान) और ना ही हम उनको हिलाएंगे माना उनके दुःखों का कारण बनेंगे बल्कि हम तो उनका निवारण बनेंगे। हम हिलेंगे नहीं, हम तो खिलेंगे। हिलना अर्थात् हारना, खिलना अर्थात् खेलना (परिस्थितिओं से)।

याद रखें-
जो हिलता है, वो खिलता नहीं,
जो खिलता है, वो हिलता नहीं।



लाभ ही क्या लिया? आप पहले भी डरते थे, भयभीत होते थे, चिंतित रहते थे और आज भी यही सब है आपके जीवन में, कभी बीते कल की फिक्र, तो कभी आने वाले की। अरे! आप स्वयं ही सब कर लेंगे या कुछ भगवान के लिए भी छोड़ेंगे। बहुत बार ब्राह्मण आत्माओं के परिस्थिति आने पर पसीने छूट जाते हैं। उनका ये कहना है कि हम बाबा के बन गए फिर इतनी सब समस्याएं हमारे सामने क्यों? अरे! मीठी आत्माओं आप ये क्यों भूल जाती हो कि जितना बड़ा तूफान होगा वो उतना ही बड़ा तोहफा जाएगा! हकीकत तो ये है कि परिस्थितियां कभी हमें कमजोर नहीं बल्कि ताकतवर बनाने आती हैं। और बाबा ने तो ये कभी नहीं कहा कि

100 गुना मदद लेने की चाबी है हिम्मत, ये बात हमें अंडरलाइन करनी होगी। बाबा का ही महावाक्य है कि हिम्मत शक्तियां, मदद दे सर्वशक्तिवान। अब बाबा ने कहा कि हिम्मत का कदम पहले आपका फिर पदम गुणा मदद बाप की। नो हिम्मत, नो मदद। फिर चाहे आप कितने ही वर्ष पुराने क्यों ना हों। बिना हिम्मत के आज तक कोई भी व्यक्ति कोई जंग नहीं जीता है। इसलिए दिलशिकस्त होने के बजाय आओ हम एक कदम हिम्मत का उठाकर बाबा की मदद के पात्र बनें क्योंकि-
ये राहें ले ही जायेंगी मजिल तक हैसला रखो,
कभी सुना है कि अंधेरे ने सवेरा होने न दिया!
इसलिए मोटे भाइयों-बहनों ऐसे हारो न हिम्मत।



गवालियर-लश्कर (म.प्र.)। रीडिसन होटल में नई दुनिया द्वारा आयोजित 'नई दुनिया गौरव सम्मान 2022' से ब्रह्माकुमारी संस्थान के राजयोगी ब्र.कु. प्रहलाद भाई को आध्यात्मिकता के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में वरुचल रूप से शामिल हुए भारत सरकार के केंद्रीय कृषि एवं कल्याण मंत्री माननीय नरेंद्र सिंह तोमर, राज्यमंत्री ओ.पी.एस. भदौरिया, कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित सांघी, नई दुनिया के यूनिट हेड दिनेश उपाध्याय, नई दुनिया के संपादक वीरेंद्र तिवारी एवं मार्केटिंग हेड तथा अन्य गणमान्य लोग।



रीवा-म.प्र.। 'दया एवं करुणा' वार्षिक थीम के अंतर्गत ब्रह्माकुमारी के कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा गुरु आश्रम में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में जगद्गुरु श्री 1008 प्रपन्नाचार्य स्वामी गरुण महाराज जी, राष्ट्रभक्त समाज सेविका एवं कवियत्री रसना द्विवेदी, विंध्य क्षेत्र रीवा के लोकप्रिय गायक नीलेश श्रीवास्तव, कोरियोग्राफर शिव कुशवाहा, आकाशवाणी रीवा की उद्घोषिका एवं गायिका बिंदु ओझा व अन्य कलाकारों सहित संस्थान की क्षेत्रीय संचालिका एवं कला संस्कृति प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, प्रबंधक मणि शंकर ओझा, प्रबंधक शिखा चिकटे, प्रबंधक उपमा वर्मा, एसडीओ सीपी मालवीय, मोनिका मालवी, ऋषि मालवी, प्राचार्य ब्र.कु. दीपक तिवारी, प्राचार्य शैल तिवारी सहित 200 से अधिक ब्र.कु.भाई-बहनें उपस्थित रहे।



गरियाबंद-छ.ग.। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं ब्र.कु. नारायण भाई, इंदौर, डॉ. डी.के. साहू, प्राचार्य, ब्र.कु. प्रिया बहन, समाजसेविका रुचि बहन, महेश राम नेताम तथा अन्य।

विश्व कल्याण के कर्णधारों को हृदय से श्रद्धासुमन अर्पित



शांतिवन। बापदादा व दीदी दादी के अति लाडले, यज्ञ के वफादार, सर्व के स्नेही, शांतिवन की स्थापना के निमित्त तथा प्रबंधक, दिनरात बाबा की सेवाओं को, यज्ञ को विस्तार रूप देने व सदा उसी चिंतन में रह उसकी सम्भाल करने वाले हम सबके अति प्रिय भूपाल भाई जो 51 वर्षों से समर्पित रूप से अथक बन मधुबन बेहद यज्ञ में अनेकानेक सेवाएं देते रहे। शांतिवन, मनमोहिनीवन परिसर, सोलर पार्क, मानसरोवर तथा बवैरी आदि के स्थानों को खरीदने में आपका पूरा योगदान था।

मुख्यालय के समीप राजस्थान के अनेक सेवाकेंद्रों के निर्माण में भी आपने पूरा सहयोग दिया। कुछ समय से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। अतः दिनांक 20 दिसम्बर 2022 को सवेरे 9 बजे ट्रॉमा सेंटर में अपना पुराना शरीर छोड़ आप बापदादा की गोद में चले गये। 21 दिसम्बर सुबह शांतिवन,



बापदादा को गुलदस्ता भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. भूपाल भाई जी

आनंद सरोवर, मनमोहिनीवन आदि स्थानों की परिक्रमा के पश्चात् ज्ञानसरोवर, पांडव भवन के चारो धामों की यात्रा कराने के पश्चात् नदी के पास बने मुक्तिधाम में अंतिम संस्कार के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी गई। ऐसी अथक सेवाधारी, यज्ञ की वफादार, ईमानदार आत्मा को पूरा ब्राह्मण परिवार अपनी स्नेह भावांजलि अर्पित करता है।



रायपुर-छ.ग.। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी कमला दीदी की संस्थान की सेवाओं को छत्तीसगढ़ में विस्तारित करने में अहम भूमिका थी। माउण्ट आबू के बाहर संस्थान के प्रथम रिट्रीट सेंटर के रूप में शांति सरोवर का निर्माण उनके ही अथक परिश्रम से संभव हो सका। वर्तमान समय इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका के रूप में छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश के साथ ही समीपवर्ती राजस्थान और ओडिशा के कुछ सेवाकेंद्रों का प्रशासन भी वे देख रही थीं। वे इस संस्थान के एजुकेशनल सोसायटी एवं राजयोगा एजुकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन की गवर्निंग बोर्ड की सदस्या होने के साथ ही सुरक्षा सेवा प्रभाग की नेशनल कोऑर्डिनेटर थीं। कमला दीदी की सामाजिक सेवाओं को देखते हुए वर्ष 1997 में मध्य प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल मोहम्मद शफी कुरैशी ने 'सेठ नेमीचन्द्र श्रीश्रीमाल समाजसेवा अभिनंदन अवॉर्ड' प्रदान कर सम्मानित किया। इसके अलावा वर्ष 2009 में तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह द्वारा 'स्त्री शक्ति सम्मान' प्रदान कर सम्मानित किया गया था।

राजयोगिनी ब्र.कु. कमला दीदी के दिल में आदिवासियों के प्रति बहुत दया भावना थी। उनके मार्गदर्शन में 15 मई 1987 से बस्तर अंचल के 65 ग्रामों में अध्यात्म के द्वारा आदिवासियों के जीवन को संवारने-सुधारने का कार्य किया जा रहा है। आपकी उम्र 81 वर्ष थी। पिछले कुछ दिनों से उनकी तबियत ठीक

न होने के कारण रायपुर के एक निजी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। 10 दिसम्बर 2022 को आपने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। 11 दिसम्बर को उनके पार्थिव देह का अंतिम संस्कार शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर में ही किया गया। ऐसी अथक, प्रेमस्वरूप, त्यागमयी महान आत्मा को सारा ब्राह्मण परिवार सहृदय भावांजलि अर्पित करता है।

माउण्ट आबू-म्यूज़ियम। प्यारे बापदादा की अति लाडली, सेवाओं में सदा अथक बन हाँ जी का पाट बजाने वाली, आबू के आध्यात्मिक संग्रहालय में सेवारत, हम सबकी अति स्नेही राजयोगिनी ब्र.कु. प्रतिभा बहन ने 1969 में मुम्बई कांटीवली से ज्ञान प्राप्त किया था। 1972 में आप आबू में सेवा पर आई और आध्यात्मिक संग्रहालय में बहुत उमंग-उत्साह से अपनी सेवाएँ देती रहीं। कुछ समय से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था इसलिए ग्लोबल अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ ले रही थीं। 22 दिसम्बर 2022 की शाम को आप अपने पुराने शरीर का त्याग कर बापदादा की गोद में चली गईं। 23 दिसम्बर को उनके पार्थिव शरीर को ज्ञानसरोवर, मधुबन पांडव भवन के चारो धामों की यात्रा कराने के पश्चात् आध्यात्मिक संग्रहालय होते हुए मुक्तिधाम में उन्हें अंतिम विदाई दी गई। ऐसी स्नेही सर्विसेबल, सबकी दुआएं लेने वाली महान आत्मा को पूरा ब्राह्मण परिवार अपनी स्नेह श्रद्धांजलि अर्पित करता है।



आपने बहुत सारे ऐसे संत-महात्माओं की जीवनी पढ़ी या सुनी होगी जिन्होंने समाज में व्याप्त अनैतिक व अव्यवहारिक रीति-रिवाजों-परंपराओं का पुरजोर विरोध किया और कटाक्ष भी किया। कटाक्ष इस बात का कि आप सभी अपने कर्म पर विश्वास कम करते हो लेकिन भगवान और भक्ति को लेकर बहुत सारी भ्रांतियों के बीच जीते रहते हो। उन्होंने हर पल समाज के उन पहलुओं पर ही ध्यान दिया जो अंधविश्वासों और भ्रमों से ओत-प्रोत था। उसको ही ठीक करने में वे तत्पर रहते थे, ये हो गया संत-महात्माओं का एक पक्ष।

आज के समाज को हम लेते हैं, समाज-सुधारकों की फ़हरिस्त बहुत लम्बी है। सभी अपने-अपने क्षेत्र को लेकर बहुत ज़्यादा चिंतित भी हैं, लेकिन अध्यात्म का पहलू सबसे अलग है और अद्वितीय है। क्यों है, क्योंकि इसमें ज्यादातर समझ किसी चीज़ की आ जाये तो उसके आधार से हम कर्म कर लेते हैं, लेकिन पूरी समझ न होने के कारण हम बुद्धि के स्तर पर इस बात को समझते हैं, लेकिन सबकी भावनाओं को ठेस भी पहुंचाते रहते हैं। जैसे एक संत हुए जो कहते थे, 'मन चंगा तो कठौती में गंगा', इसका भावार्थ सबको पता है कि मन अगर शुद्ध है, पवित्र है तो आपको गंगा में स्नान करने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप व्यक्ति के भाव को

भावना बिना किसी से प्राप्ति नहीं

देखो, भाव से उसने अपने आप को उस स्थान पर लाकर खड़ा कर लिया जहाँ बड़े-बड़े ऋषि-मुनि भी नहीं पहुँच पाये। भावना के कारण हम सभी बहुत ऐसी बातें कर जाते हैं जो हम नहीं करना चाहते। उदाहरण के लिए अगर मेरा किसी के प्रति अच्छा भाव नहीं है या अच्छी भावना नहीं है तो वो अगर अच्छी बात भी कहे तो हमें वो बात बुरी लगती है या हम अनसुना कर देते हैं, या किसी के प्रति ईर्ष्या का भाव है तो अगर वो सामान्य बात भी सुना रहा होगा तो हमें कमेट नज़र आता है। हम सोचते हैं कि शायद मेरे लिए ही कहा है। क्यों ऐसा हो रहा है, क्योंकि हमने अपनी समझ तो बढ़ाई अध्यात्म में आने के बाद, लेकिन भाव नहीं बदले। भाव न बदलने के कारण आज हमारी ये दुर्गति है। अगर आप दुनिया में कहीं किसी जगह पर जाकर रहना चाहते हैं और वहाँ पर एक भी व्यक्ति न हो और आपको अकेले रहना हो, आप रह पायेंगे! चाहे कितना ही सस्ता फ्लैट हो, फिर भी आप जब फ्लैट लेते हैं तो देखते हैं कि इस एरिया में कितने फ्लैट बिके। तो आप बताओ कि फ्लैट की कीमत है या व्यक्ति की कीमत

है? हमारे भाव व्यक्तियों के प्रति बदल गये और भाव न रखने के कारण आज ये हालत है। अब वो भाव बदल कर जड़-मूर्तियों के लिये हो गये। आप ये बताओ, जो चैतन्य लोगों के साथ रहना दुभर समझता है, उनके लिए ताले लगा

जब
तक परमात्मा के लिए
भाव नहीं होगा, परमात्मा के घर
के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के
बच्चों के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा
के एक-एक चीज के लिए भाव नहीं होगा,
तब तक हम न उस भावना के साथ
सेवा कर पायेंगे और न ही दूसरों
को प्राप्ति करा पायेंगे।

देता है, उनके साथ बातचीत करने में उसे विवशता नजर आती है। तो अगर वो जड़-मूर्तियों के साथ भाव रखेगा तो उससे उसे क्या प्राप्त होगी। इसीलिए भाव के आधार से भावना हमारी किसी के प्रति बनती है। हम पूरे जीवन ज्ञान-योग करें, लेकिन मनुष्यों के प्रति न भाव

बदले, न भावना बदली। रहना आखिर हमको मनुष्यों के साथ ही है, लेकिन अगर भाव और भावना ठीक नहीं होगी तो प्राप्ति कैसे होगी! इसीलिए आज किसी को किसी से कुछ मिल नहीं रहा है, क्योंकि भावना नहीं है। शिव निराकार परमात्मा भी हमको यही सिखाते आ रहे हैं कि सारे ज्ञान-योग का सार भाव ही तो है। हमारा शारीरिक भाव आया, पद का भाव आया, स्थान का भाव आया, रंग-रूप का भाव आया, तो ये सारे भाव हमको गर्त में ले गये और हमारी भावना भी बदलती चली गई। भाव अगर माता-पिता के लिए न हों तो उनके लिए भावना कैसी बनेगी हमारी! क्या हम सेवा कर पायेंगे! ऐसे ही शिव परमात्मा हमें आत्मिक भाव लाने के लिए कहते हैं। जैसे ही आप आत्मिक भाव लायेंगे, सबके लिए भावना बदल जायेगी।

किसी के कर्म, किसी के रंग-रूप पर हम नहीं जायेंगे, हम सिर्फ और सिर्फ वास्तविक रूप से जुड़ेंगे और देवत्व की तरफ बढ़ेंगे। क्योंकि देवतायें सबके लिए बराबर हैं, सबके लिए समान हैं और देवताओं के लिए सब समान हैं। इसीलिए देवी-देवताओं की जड़-मूर्तियों

के लिए भी
सबमें
भावना है।
इसीलिए
तुलसीदास
ने कहा है,
'जाकी रही
भा व न ।



» ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

मूरत देखी तिन तैसी'। इसलिए बिना भाव ज्ञान रूखा-सूखा है। जब ज्ञान के आधार से, समझ के आधार से भावना जुड़ जाती है, उस अध्यात्म में रस बढ़ जाता है। और भावना से सबसे बड़ी चीज जो होती है वो है हमारी एकता, एक-दूसरे के प्रति विश्वास, एक-दूसरे के बारे में अच्छा सोचना आदि-आदि बढ़ जाता है।

हमारी ये दृढ़ मान्यता है कि जब तक परमात्मा के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के घर के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के बच्चों के लिए भाव नहीं होगा, परमात्मा के एक-एक चीज के लिए भाव नहीं होगा, तब तक हम न उस भावना के साथ सेवा कर पायेंगे और न ही दूसरों को प्राप्ति करा पायेंगे। क्योंकि जैसा हम लोगों के लिए भावना कम रखते हैं तो लोग भी हमारे लिए भावना कम रखेंगे, तो प्राप्ति कम होगी। और हम सोचते हैं कि हम इतना कुछ करते हैं, इतना परमात्मा के एक-एक श्रीमत पर चलते हैं, फिर भी हमें प्राप्ति क्यों नहीं हो रही! तो सब कुछ भावना है।

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दे



प्रश्न : मैं इलाहाबाद से गजानन मिश्र हूँ। आप कहते हैं कि योगबल, संकल्प बल से सतयुग में संतान उत्पत्ति होती है, आप भी वर्षों से राजयोग कर रहे हैं तो क्या आप भी ये चमत्कार करके दिखा सकते हैं? यदि आप अभी ये करके दिखा दें तो हम आपके फॉलोअर बनने को तैयार हैं। और आप जो कहेंगे हम वो मानेंगे।

उत्तर : हम तो भगवान के बच्चे हैं हम तो सबको उससे जोड़ना चाहते हैं। दूसरी बात हम जो कहेंगे वो आप मानेंगे ये बात भी हम कैसल कर रहे हैं। जो भगवान कहे वो आपको मानना है। और ये भगवान ने कहा है और ये हमारे वेदों में भी है कि सृष्टि के आदि में अमैथुनी सृष्टि चली, सृष्टि माना संतान, रचना अमैथुनी विकारों के बिना। पवित्रता के बल से, अमैथुनी सृष्टि हुई, संतान हुई। तो वास्तव में मनुष्य समझ नहीं पाते, उनको आजकल का ये विषय-वासनाओं का, भोग-विलास का जो जीवन है, उससे जो संतान उत्पत्ति हो रही है, उसी के बारे में पता है। उन्हें पता ही नहीं योगबल क्या होता है। उन्हें पता ही नहीं कि सृष्टि के आदि की, सतयुग की प्रकृति की स्थिति क्या थी इसलिए मनुष्य के मन में ये प्रश्न उठते हैं। रही बात योगबल से संतान उत्पन्न करने की आपको ये मालूम होना चाहिए, योगबल से संतान उत्पत्ति तभी हो सकती है जब आत्मा और शरीर दोनों ही पावन हों। लेकिन इस कलियुग में कोई कितना भी बड़ा राजयोगी क्यों न हो। उसका देह पावन नहीं होता। क्योंकि देह पतित तत्वों से बना है, देह पतित माँ-बाप के सम्बन्ध से बना है। इसलिए देह में इम्प्युरिटी रहती ही है। इसलिए संकल्प बल को, संकल्प के कमांड को हमारा देह स्वीकार नहीं करता। हमेशा मानता नहीं है। जब देह और आत्मा दोनों पवित्र हो जायेंगी तो आत्मा के संकल्प देह तुरंत स्वीकार करेगा। और उसमें वो रिएक्शन हो जायेंगे जिससे संतान उत्पन्न होगी। तो ये कार्य अभी नहीं किया जा सकता। आपको अगर जानना हो कि योगबल क्या होता है तो आपको राजयोग का अभ्यास करना होगा। बहुत सारे चमत्कार इस संसार में होते हैं, आज दो मुख वाले बच्चे पैदा हो जाते हैं, चार हाथ वाले भी पैदा हो जाते हैं। ये सब भी तो चमत्कार हैं। लेकिन इन सब चमत्कार से हमें क्या मिलता है?

ज्ञान लेना, राजयोग का अभ्यास करना, परमात्म मिलन का सुख लेना उससे बड़ा चमत्कार और कोई नहीं। जिस गुरु ने चमत्कार दिखाये उसके लाखों शिष्य। और ब्रह्माकुमारीज को इतने साल हो गये फिर भी पंद्रह लाख ही इसके फॉलोअर्स कहे जा रहे हैं। लोग जरूर सोचते होंगे कि क्या पंद्रह लाख पवित्र आत्मायें हैं! वो पंद्रह लाख महान आत्मायें हैं, पंद्रह लाख लीडर्स तैयार हुए हैं। पंद्रह लाख ऐसी आत्मायें तैयार हुई

जिनका मनोबल बढ़ा-चढ़ा है, जिन्होंने पांचों विकारों को चैलेंज किया हुआ है। इसलिए संख्या बढ़ाना, हमारे पीछे लोग भाग आयें, हमारे फॉलोअर्स बन जायें, हम अथाह सम्पत्ति के मालिक बन जायें ये हमारा लक्ष्य नहीं है। हमारे पास तो जो आयेगा हम उसे परमात्मा की ओर ले चलेंगे। हम उसे पवित्रता का मार्ग दिखायेंगे। तो न तो हमें चमत्कार दिखाने हैं, और न ही इसके पीछे लोगों को आकर्षित करना है। क्योंकि हमारा लक्ष्य परमात्मा ने जो दिया है आत्माओं को पावन बनाना, और इस धरा को स्वर्ग बनाना है।

मन की बातें



- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य भाई

प्रश्न : मैं ब्र.कु. राजेश हूँ इंदौर से। शिव बाबा कहते हैं कि मुझे कम से कम आठ घंटा याद करो। ये कैसे सहज हो और दूसरा आठ घंटों में कौन-कौन-सी बातें शामिल हैं?

उत्तर : इसको हम आठ घंटे योग के अलावा एक दूसरा नाम दे दें, अव्यक्त स्थिति। यानी व्यक्त भाव से परे। इसमें हम मुरली सुनने और सुनाने को भी जोड़ लें क्योंकि उसमें भी हम व्यक्त भाव से परे हैं, ईश्वरीय महावाक्यों का आनंद लेते हैं और देते हैं, लेकिन कुछ चीजों को सारा दिन प्रैक्टिस करनी चाहिए। इसमें पॉवरफुल योग परमधाम में, इसमें शिवबाबा से बातें करना, जिसको हम रूहरिहान कहते हैं। अपने फरिश्ते स्वरूप का अभ्यास करना, अपने पाँच स्वरूपों का अभ्यास करना, स्वप्न का अभ्यास, अशरीरीपन का अभ्यास, आत्मिक दृष्टि का अभ्यास, सबको गुड वायब्रेशन देने की प्रैक्टिस ये सब इसमें काउंट हो जायेंगे।

मैं एक सुन्दर-सी प्लानिंग देना चाहता हूँ सबको कि जो आठ घंटे योग के अभिलाषी हैं इसमें ज्यादा बैठने की आवश्यकता ही नहीं है। कर्म में ही हमें इसकी प्लैनिंग करनी होगी। अलग-अलग कार्यों में अलग-अलग प्रैक्टिस हो। परमधाम में भी योग लगायें, सूक्ष्मवतन में भी रूहिरिहान करें, बापदादा से वरदान भी लें और पाँचों स्वरूपों का अभ्यास भी करें और उसमें विश्व को वायब्रेशन देने का कार्य भी करें। फिर जैसे इस शरीर को तैयार करने के लिए एक बहुत अच्छी प्रैक्टिस है- मैं आत्मा हूँ ये देह मेरा मंदिर है।

मैं मूर्ति चेतन, मैं मूर्ति इस मंदिर में हूँ, इसकी सफाई, इसका श्रृंगार कर रही हूँ। बहुत अच्छी फीलिंग देगी। स्नान आदि करते हुए अशरीरीपन की प्रैक्टिस और अपने भविष्य स्वरूप को देख लिया करें बीच-बीच में हम ऐसे थे, इतने डिवाइन थे, हमारी कंचन काय थी, हम कितने पवित्र थे, उसको भी याद कर लिया करें। तो ये जो एक डेढ़ घंटा समय है वो हम इस तरह स्वमान में व्यतीत करें और इस तरह प्रैक्टिस में व्यतीत करें। हो सकता है पंद्रह मिनट अव्यक्त मुरली का अध्ययन भी कर लें। फिर मुरली सुनने जायें और फिर बहुत तन्मयता के साथ महावाक्य सुनें। भगवान मुझसे बात कर रहा है और मैं आत्मा यहाँ बैठकर कानों से मुरली सुन रही हूँ। बीच-बीच में ये प्रैक्टिस करते हुए मुरली सुनेंगे तो मुरली का पौना घंटा भी योग में काउंट हो जायेगा। हमारी स्थिति बहुत अच्छी होगी, हम वहाँ से बहुत आनंदित होकर उठेंगे। उसके बाद जब नाश्ता करेंगे और कार्य पर जायेंगे तो ये सब करने से पहले बापदादा का आह्वान करें। उनके साथ ही हम आगे बढ़ें। शाम को फिर ड्रामा की स्मृति के साथ वापिस आयें। आज का ये ड्रामा का कार्य पूरा हुआ। मैं अपने घर मंदिर में जा रहा हूँ। बहुत गुड फीलिंग के साथ हमारा घर बहुत सुंदर है। सब देवकुल की आत्मायें हैं। कितना सबकुछ अच्छा भगवान ने हमें दिया है। इस फीलिंग के साथ घर लौटें। जितने भी कार्य कर रहे हैं हम सबसे पहले उसकी लिस्ट बना लें। फिर इस तरह से भिन्न-भिन्न अभ्यास कर लें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल





बच्चों को गलत मार्ग पर जाने से बचाना होगा

सभी परिवारों में आजकल एक समस्या उभरती जा रही है वो ये कि बच्चे जैसे ही बड़े होते हैं 9वीं-10वीं तक आते-आते ही कई बच्चे गलत मार्ग पर चल पड़ते हैं। माँ बाप को पता लगता है उनके रिजल्ट से। चिंता होगी, संकल्प बहुत चलेंगे कि इनका भविष्य क्या होगा! आजकल तो युवकों में कई तरह की माया काम कर रही है। छोटी आयु से वासनायें बढ़ने लगती हैं, अफेयर्स में अटकने लगते हैं। कहीं बुरे संग में चले जाते हैं, पढ़ाई पर ध्यान नहीं देते, व्यसनों के अधीन हो जाते हैं। जब मैं सुनता हूँ कई कन्यायें शराब पी रही हैं, सिगरेट पी रही हैं तो मुझे लगता है कि व्यसन कल्चर को फॉलो करके हमारे देश की कन्यायें किस तरफ जा रही हैं। उन्हें भारत के महान कल्चर का कोई पता नहीं है, लेकिन ये आने वाले महाविनाश के चिन्ह हैं। भारत की नारियाँ, इनमें भी विशेष पवित्र कन्यायें गलत मार्ग की राही बन जायें तो समझ लो कि अन्तिम समय आ पहुँचा है।

भारत की नारी तो गौरव थी, भारत की नारी तो संसार को राह दिखाने वाली, भारत की नारी तो बहुत विदुषी, परमयोगिनी, परम पवित्र आत्मायें रही हैं। खैर जो भी हो रहा है बच्चों की स्थिति देखकर माँ बाप तो अवश्य दुःखी होते हैं। चिंता लगती है और व्यर्थ के संकल्पों में चलकर कई पिता तो हार्ट पेशेन्ट बन गये, मातायें उदास हो गईं। क्योंकि बच्चे किसी की मानेंगे नहीं। मुझे तो क्लीयर आभास है अगर हम भगवान की मानेंगे हम भी तो उसके बच्चे हैं ना! हम भगवान के बच्चे उनकी बात मानेंगे तो हमारे बच्चे हमारी भी बात मानेंगे। बाबा ने स्मिरिचुअलिटी की बहुत-सी विधियाँ हमें बताई हुई हैं। यदि तुम अपने बच्चों को आत्मिक दृष्टि से देखने का अभ्यास करेंगे, स्वयं को श्रेष्ठ स्वमान में रखेंगे तो आपके बोल में इतना प्रभाव होगा, प्यार से, सद्भावना से रखते हुए आप अपने बच्चों को जो अच्छी राय देंगे तो वो उनको बहुत अच्छी लगेगी। वो सत्य राह पर चलेंगे, बिगड़ाव खत्म हो जायेगा और आपकी चिंतायें और व्यर्थ संकल्प समाप्त हो जायेंगे। खुशी बढ़ जायेगी इसलिए अब बच्चों के भविष्य को लेकर परेशान न हों। रात-दिन सोच-सोच कर अपने को बीमार

न करें। बल्कि इसका समाधान ढूँढ़ें।

आजतक हमने जो प्रयोग करायें हैं उसके आधार पर मैं आप सबको कहूँगा कि आधा घंटा रोज अपने बच्चों के लिए राजयोग मेडिटेशन करें, उन्हें अच्छे वायब्रेशन दें बहुत अच्छा होगा। दूसरा घर में उन्हें प्यार दें, उनकी बात सुनें, उनके साथ बैठें इसका बहुत अभाव हो गया है आजकल। मोबाइल का जमाना है, बच्चों के पास भी टाइम नहीं और माँ-बाप के पास भी टाइम नहीं। आइसोलेशन ज्यादा होता जा रहा है। दूरियाँ बढ़ रही हैं। जब कन्याओं को घर में प्यार नहीं मिलता तो वो बाहर इधर-उधर प्यार में भटक जाती हैं। एक अच्छा माहौल घर का बनायें। जिसमें घर के सभी बच्चे जीना सीख जायें, सुन्दर विचार सीख जायें। क्योंकि उन्हें भी आगे चलकर परिवार बसाना है। उसकी जिम्मेदारी सम्भालनी है। जो संस्कार उनमें अभी भर जायेंगे

आप
हमारे परिवार के बड़े
हैं। उन्हें अपने परिवार का
बड़ा बना लें, लेकिन कहने मात्र
नहीं, प्रैक्टिकल में। तो उसकी
मदद पूरे परिवार को बहुत ही
अच्छी मिलने लगेगी।

वही आगे उनके बच्चों में भी आ जायेंगे। इसलिए हम अपने भारत के निर्माता भी हैं। तो बच्चों को सही राह पर लाना है। ये कुछ बातें मैंने आपको कही, और भी कुछ गृहय रहस्य मैं आपके समक्ष रख देना चाहता हूँ। बच्चों के भविष्य के लिए बहुत परेशान नहीं बल्कि शुभभावनायें भर लें अपने मन में। रोज सवेरे उठकर ये सुन्दर संकल्प किया करें। अपने बच्चों को देखें, भले ही वो सोये हों। ये बहुत अच्छी आत्मायें हैं, ये बहुत समझदार हैं, ये बहुत बुद्धिमान हैं, बड़े भाग्यवान हैं। हमारे कुल के दीपक हैं इनका भविष्य बहुत सुन्दर होगा। सबको रीसयस लेवल पर जाकर इस तरह उनके विचारों को बदल सकते हैं। क्योंकि बहुत बच्चे ऐसे भी तो हैं जो अठारह-बीस साल के होते-होते बड़े-बड़े काम सम्भाल लिए हैं। बाप के सहयोगी बन गये हैं। अपनी जिम्मेदारियों से तो छोड़ें बाप को भी जिम्मेदारियों से मुक्त कर दिया है। ऐसी अच्छी

सन्तानें भी बहुत हैं इस देश में। लेकिन जो बिगड़ाव आया है, जिसमें बच्चों के भविष्य को लेकर माँ-बाप बहुत चिंतित होते हैं और व्यर्थ संकल्प बहुत चलने लगते हैं, तो उनकी जिम्मेदारी शिव बाबा पर छोड़ दो। सुबह जब योगदान दो बच्चों को तो साथ में ये भी संकल्प करना कि बाबा ये आपके बच्चे हैं इन्हें सद्बुद्धि देना, इन्हें सही मार्ग पर रखना ये आपका भी काम है। आप हमारे परिवार के बड़े हैं। उन्हें अपने परिवार का बड़ा बना लें, लेकिन कहने मात्र नहीं, प्रैक्टिकल में। तो उसकी मदद पूरे परिवार को बहुत ही अच्छी मिलने लगेगी। कई जगह ऐसे भी केस होने लगे हैं कि बच्चे बड़े हो गए तो बाप का सामना करते हैं, अपमान करते हैं, बुरे वचन बोलते हैं, भावनाओं को हर्ट करते हैं। अब इसमें माँ-बाप की पॉजिशन एक ऐसी पॉजिशन है उन्होंने बच्चों को बहुत प्यार दिया, बहुत अपनापन दिया। ऐसा मैं समझता हूँ, देखता हूँ कि माँ-बाप तो अपने बच्चों के लिए जीवन ही कुर्बान करके चलते हैं। सबकुछ तुम्हारा है हमारे बच्चे बहुत सुखी रहें। इनका भविष्य बहुत सुन्दर हो। कितनी श्रेष्ठ भावनायें!

माँ-बाप अपने बच्चों को सम्मानित देखना चाहते हैं। ऐसे मात-पिता का जब कदम-कदम पर अपमान होने लगता है तो उनकी परेशानियों की सीमा नहीं रहती। खुशी चली जाती है। एक गहरा टेंशन छा जाता है, इसलिए इसका इफेक्ट हर्ट पर बहुत गहरा आता है। बाप ने अपने बच्चों के लिए सबकुछ किया लेकिन बच्चे कहते हैं कि आपने हमारे लिए किया ही क्या? गुस्सा भी करने लगे और डांटने भी लगे बाप को, अपमान भी करने लगे तो बाप का दिल रो उठेगा ना! लेकिन मैं आप सभी को कहूँगा कि ये कलियुग का अंत है इसमें तमोप्रधानता का सम्पूर्ण प्रकोप है। इसलिए थोड़ा अपने को हल्का कर दें और इन चीजों को स्वीकार कर लें। अपनी मनोस्थिति को, अपनी हेल्थ को इन चीजों से बिगाड़ें नहीं। सबका भविष्य हमारे ही हाथ में नहीं उनके अपने हाथ में भी है। उनके अपने कर्म भी उनके भविष्य का निर्माण करते हैं। मैं सभी मात-पिताओं को कहूँगा कि आप सभी अपने बच्चों के सहयोगी बनकर रहें। न तो परेशान हों और न ज्यादा उन्हें आदेश दें। स्वमान में स्थित हो आत्मिक स्थिति का अभ्यास बढ़ाएं, स्वमान में स्थित आत्मा का सम्मान स्वतः ही होता है। आपको तो भगवान सम्मान दे रहा है, मनुष्य भी सम्मान अवश्य देंगे। बच्चों को शुभ भावना, प्रेम, अपनापन देते चलो। हल्के भी रहो तो व्यर्थ संकल्पों से आप मुक्त रहेंगे और बच्चों पर भी उसका प्रभाव पड़ेगा ही।



गाचीबोवली-हैदराबाद(तेलंगाना)। ग्लोबल पीस ऑडिटोरियम में दिव्यांग बच्चों के लिए 'आई कैन डू इट' विषय पर आयोजित अभियान में दीप प्रज्वलित करते हुए अरविंद कुमार गारू,आईएएस, विशेष मुख्यसचिव एमए एंड यूडी, अजय कुमार,परिवहन मंत्री, कृष्णा येदुला सेंटर हेड वर्तुसा, भावेश भाटिया,नेत्रहीन व्यापारी महा., महेंद्र वैष्णव नेत्रहीन क्रिकेटर, दिव्यांग वसुंधरा,वीव मीडिया की सीईओ, राजेंद्र रेड्डी सहायक निदेशक दिव्यांग विभाग, शांति सरोवर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. कुलदीप दीदी, ब्र.कु. सूर्यमणि,माउण्ट आबू,राष्ट्रीय दिव्यांग सेवा समन्वयक, ब्र.कु. मंजू दीदी सिकंदराबाद शाखा। कार्यक्रम से 4500 दिव्यांग बच्चे लाभान्वित हुए।



कोलकाता-प.बंगाल। ऑल इंडिया कार्डसिल ऑफ पब्लिक रिलेशन्स एंड मीडिया द्वारा आयोजित 'द इंटरनेशनल ग्लोबल कम्युनिकेशन कन्क्लेव कोलकाता' में ब्र.कु. डॉ. बिन्नी सरीन को 30 वर्षों से भारतीय सेनाओं का मनोबल बढ़ाने, मानसिक सशक्तिकरण, तनाव प्रबंधन व मेडिटेशन द्वारा विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने एवं विश्व भर में ब्रह्माकुमारीज संस्थान द्वारा आध्यात्मिक सेवाओं में बहुमूल्य योगदान के लिए 'चाणक्य अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन अरूण विश्वास ने किया। इस मौके पर एम.बी. जयराम,फाउण्डर ऑफ सत्यम चौधरी टेक्नो इंडिया ग्रुप, कंचन गुप्ता,सीनियर एडवाइजर,मिनिस्ट्री ऑफ इन्फार्मेशन एंड ब्रॉडकास्टिंग,भारत सरकार सहित अन्य प्रतिष्ठित लोग उपस्थित रहे।



टेक्सास-डलास(यूएसए)। भारत की 'अजादी के अमृत महोत्सव' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं कॉंसुलेंट जनरल ऑफ इंडिया असीम महाजन, ब्रह्माकुमारी बहन तथा अन्य गणमान्य लोग। इस मौके पर ब्रह्माकुमारीज की ओर से सभी को तिरंगे के रंग की राखी बांधी गई। इसके पश्चात् सभी गणमान्य लोगों ने ब्रह्माकुमारीज के तपस्या धाम रिट्रीट सेंटर का दौरा भी किया।



होवेआ-वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया। ब्रह्माकुमारीज हंटिंगडेल तथा यूनिवर्सल ग्रेट ब्रदरहुड,पर्थ के संयुक्त तत्वाधान में होवेआ सेंटर में 'शेयरिंग वैल्यूज फॉर अ बेटर वर्ल्ड' विषय पर आयोजित 'द इंटरफेथ प्रोग्राम 2022' के दौरान उपस्थित हैं बायें से एलेना डेविस,बहाईस, जुली बेकर,एंगलिकन चर्च, डेमियन आउटरम,ब्रह्माकुमारीज एडीलेड, मनिता बेस्कोव, यू.जी.बी., सैली हर्जफेल्ड,क्वेकर्स, नरेन्द्रनाथन नागमुथु,हिंदुइज्म तथा राजेन राजू,ब्रह्माकुमारीज हंटिंगडेल। इस कार्यक्रम में ब्र.कु. मनजीत सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहे।



विदिशा-म.प्र.। कन्या महाविद्यालय में आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर के अंतर्गत स्पोर्ट विंग से 'खेलेगा इंडिया तो जीतेगा इंडिया' आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में छात्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रानी बहन,सतना। कार्यक्रम में उपस्थित रहे मुकेश टंडन,पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष, राकेश शर्मा,सांसद प्रतिनिधि नगर पालिका जन प्रतिनिधि, शैलेंद्र सर्वैया पार्षद, कोच प्रशिक्षक, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सपना बहन, ब्र.कु. लीला बहन उपस्थित रहे।



सतना-कृष्णा नगर(म.प्र.)। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज के खेल-कूद प्रभाग द्वारा केंद्रीय विद्यालय क्र.-2 शिवाजी नगर भोपाल में 'खेलेगा इंडिया तो जीतेगा इंडिया' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. डॉ.रानी दीदी, ब्र.कु.लीला बहन, ब्र.कु.आशीष भाई, ब्र.कु.शिवम भाई, विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकगण व विद्यार्थीगण मौजूद रहे।



मुम्बई-भांडुप वेस्ट। बृहन्मुंबई महानगरपालिका द्वारा 'मेरी मुंबई, स्वच्छ मुंबई' अभियान के अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर साफ-सफाई व स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम में शामिल हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.लाजवंती बहन, वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक नितिन उन्हवने, अन्य पुलिस स्टाफ व ब्र.कु.भाई-बहन।

शीघ्र आवश्यकता

सरोज लालजी महरोत्रा ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज एवं ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी आबूरोड,सिरोही, राजस्थान में दो किचन असिस्टेंट की आवश्यकता है।

योग्यता किचन असिस्टेंट के लिए : मान्यता प्राप्त विद्यालय से सीनियर सेकेंड्री

अनुभव : चार वर्ष का भोजन पकाने का अनुभव

संपर्क करें :

मोवाइल नं : 8503891074

ई-मेल : nntagrawal@gmail.com

अलौकिक समर्पण समारोह • विश्व शांति धाम में हुआ भव्य आयोजन, सभी ने समर्पित होने वाली कन्याओं को दी ढेर सारी शुभकामनायें

नौ पवित्र कन्यायें चलीं अब नौ देवियां बनने की राह पर

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। ब्रह्माकुमारीज के विश्व शांति धाम सेवाकेन्द्र में आयोजित 9 बहनों के दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह में संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने बहनों को उनके दिव्य अलौकिक समर्पण के लिए प्रेरणा देते हुए कहा कि यह ब्रह्माकुमारी जीवन कोई साधारण जीवन नहीं है, यह महान जीवन है। जब हम अपना जीवन परमपिता परमात्मा को अर्पित कर देते हैं और उनकी दी हुई श्रीमत पर चलते हैं तो सभी चिंताओं से मुक्त हो जाते हैं।

पंजाब जोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेमलता दीदी ने दिव्य अलौकिक समर्पण की सभी कन्याओं को और उनके माता-पिता को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह आज का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण है कि जब ये नौ कन्यायें अपना तन, मन, धन परमपिता परमात्मा को अर्पित कर जन-जन का कल्याण करने जा रही हैं। यह सभी बहनें ज्ञान गंगाएं हैं।

इस समारोह में मुख्य रूप से शामिल कुरुक्षेत्र विधायक सुभाष सुधा ने ब्रह्माकुमारी बहनों की



संगीत संध्या का हुआ भव्य आयोजन

इस अवसर पर आयोजित गीत-संगीत संध्या में चंडीगढ़ से आये अनिल भाई ने अपने मधुर गीतों के द्वारा इस अलौकिक कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई इसके साथ ही कार्यक्रम में नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसमें इस दिव्य अलौकिक समर्पण समारोह का तथ्य लक्ष्य है, बताया गया।

प्रशंसा करते हुए कहा कि इन बहनों का जीवन कोई साधारण जीवन नहीं है। दुनिया में हर कोई किसी बीमारी का इलाज कर सकता है पर सुख-शांति कोई भी नहीं दे सकता है। लेकिन इनके द्वारा मैंने एक नहीं अनेक परिवारों में सुख-शांति आते हुए देखा है। इस मौके पर ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई व ब्र.कु. हंसा बहन ने भी अपनी शुभकामनाएं दी।

ये कन्यायें हुईं आजीवन ईश्वरीय सेवा अर्थ समर्पित

ब्र.कु. राधा बहन, ब्र.कु. सुदर्शन बहन, ब्र.कु. शिवाली बहन, ब्र.कु. लता बहन, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. पुष्पा बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. रेखा बहन व ब्र.कु. विद्या बहन

प्रतिज्ञा के साथ निराकार को पहनाई वरमाला

अपने जीवन को सत्य मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए इन नौ कन्याओं ने सम्पूर्ण पवित्रता की दृढ़ प्रतिज्ञा करते हुए परमपिता परमात्मा शिव निराकार को वरमाला पहनाई। इस अवसर पर कम से कम 2000 भाई-बहनों ने उपस्थित रहकर शुभकामनाएं दी।

ब्रह्माकुमारीज के मानसरोवर में...

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए पाँच दिवसीय विंटर कार्निवाल

छोटी उम्र में ही बच्चों के अंदर संस्कार भरना ज़रूरी

शांतिवन-मानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के मानसरोवर परिसर में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए आयोजित पाँच दिवसीय विंटर कार्निवाल में आये बच्चों को संबोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय भाई ने कहा कि इस उम्र में ही बच्चों के अंदर संस्कार भरना ज़रूरी होता है। ये बच्चे ही आने वाले नये भारत की तस्वीर पेश करेंगे।

विंटर कार्निवाल में...

पाँच दिनों तक अलग-अलग गतिविधियाँ करायी गईं। जिसमें खेलकूद, सांस्कृतिक प्रतियोगिता, बौद्धिक प्रतियोगिता, वाक प्रतियोगिता, जलेबी रेस, सेक रेस तथा



आजकल की युवा पीढ़ी कई तरह की चुनौतियों से गुजर रही है। ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि हम उनकी संभाल करें, उनका ख्याल रखें। इसमें माता-पिता की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। इसके लिए इनके बचपन को संवारने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने बताया कि इस संस्थान में नन्हें-मुन्हें बच्चों को सर्वांगीण विकास के साथ-साथ राजयोग ध्यान और नैतिक मूल्यों के लिए भी प्रेरित किया जाता है। कार्यक्रम में दिल्ली से आई मशहूर आर्टिस्ट संगीता राज ने कहा कि जैसे बड़े ध्यान से दिन-रात मेहनत कर एक चित्र तैयार होता है, उसी तरह से इन बच्चों पर दिन-रात मेहनत करने की ज़रूरत है ताकि वे एक श्रेष्ठ और सुंदर इंसान बन सकें। उनके अंदर मूल्यों को भी ऐसे ही गढ़ना चाहिए जैसे कि हम कला के माध्यम से रंग भरते हैं।

संस्थान के महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. डॉ. सविता बहन ने कहा कि बच्चे दिल

राजयोग ध्यान प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। इस कार्निवाल में आये बच्चों को दो समूहों में बांटा गया और अलग-अलग समूह के बच्चों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

के सच्चे होते हैं। उनके दिल पर इस समय जो लिख दिया जाता है, वो अमिट हो जाता है, वो ही उनके जीवन का हिस्सा हो जाता है। शिक्षा प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. शिविका तथा ब्र.कु. नेहा ने कहा कि हम भी जब बच्चे थे तब इस तरह के कार्यक्रमों में आते थे। इससे ही हमारे श्रेष्ठ जीवन की नींव पड़ी। आज के बच्चे कल के भविष्य हैं। इन पर बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है। इस मौके पर अजमेर से ब्र.कु. योगिनी बहन, जयपुर से ब्र.कु. एकता बहन व ब्र.कु. राजीव सहित कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये।

डॉ. ब्र.कु. गंगाधर व डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके 'एशिया पैसिफिक आइकॉनिक अवॉर्ड' से सम्मानित



थाईलैंड-बैंकॉक। एशिया पैसिफिक एजुकेशन सम्मिट और अवॉर्ड के आयोजन के दौरान एजुकेशन से सम्बंधित एशिया भर से आये कई शिक्षाविदों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। साथ ही साथ एशिया के देशों के मध्य अपने-अपने क्षेत्र में विशेष मानव उत्थान के लिए कार्य करने वाले 50 विशिष्ट व्यक्तियों को सम्मानित किया गया। जिसमें ब्रह्माकुमारीज के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय मा. आबू से प्रकाशित होने वाले

ओमशान्ति मीडिया पत्रिका के संपादक राजयोगी डॉ. ब्र.कु.गंगाधर को 'वैल्यू बेस्ट जर्नलिज्म' के लिए 'एशिया पैसिफिक आइकॉनिक अवॉर्ड' एवं 175 विश्वविक्रम करने वाले पहले भारतीय डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को भारत के प्राचीन राजयोग का प्रसार व प्रचार करने के लिए 'एशिया पैसिफिक आइकॉनिक अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। जिसे सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री अमोषा पटेल द्वारा प्रदान किया गया।



नैतिक मूल्यों की धारणा हमारे विचारों को श्रेष्ठ बनाती है

क्रिसमस के उपलक्ष्य में आयोजित 'सर्वधर्म प्रार्थना सभा' में ब्र.कु. प्रहलाद ने बताया सबके प्रति सद्भाव रखने का तरीका

ग्वालियर-लश्कर(म.प्र.)।

क्रिसमस के पूर्व फालका बाजार सेंट जॉन कैथेड्रल चर्च में आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में सभी धर्म-प्रतिनिधियों सहित आमंत्रित किये जाने पर ब्रह्माकुमारीज से राजयोगी ब्र.कु. प्रहलाद भाई ने कहा कि आज समाज में एक-दूसरे से छोटी-छोटी बातों मनभेद और मतभेद का रूप ले लेती हैं क्योंकि समाज में नैतिक मूल्यों की कमी हो गयी है। जीवन में नैतिक मूल्यों की धारणा हमारे व्यवहार और हमारे विचार को श्रेष्ठ बना देती है। मूल्यों से सम्पन्न व्यक्ति का व्यक्तित्व ही अलग होता है। इसलिए धार्मिक संगठन ऐसे जागरूकता कार्यक्रम समाज के लिए करते हैं जिससे समाज को परिवर्तन कर सकें और एक अच्छा पैगाम दे सकें तथा एक-दूसरे के प्रति सहयोग का भाव,



शुभ भाव और प्रेम का भाव जगा सकें। संत श्री कृपालसिंह जी महाराज ने मनुष्य के अन्दर प्रेम की उत्पत्ति का संदेश दिया। शहर क्रांजी अब्दुल अजीज कादरी ने सभी धर्मों को एक समान बताया। फूलबाग गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से बलवंत सिंह ने कहा कि गुरुवाणी में भी अमन और शांति के लिए एकता का बहुत महत्व है। पास्टर

अभिषेक जॉन ने कहा कि हमें सफाई अभियान की तरह अपने अन्दर की सफाई भी करना बहुत ज़रूरी है। सहायक पल्ली पुरोहित फादर जोसफ ने प्रार्थना की कि ग्वालियर महानगर में शांति, प्रेम और भाईचारा स्थापित रहे। फादर पवन डेविड ने आभार व्यक्त किया। शांति, सद्भावना प्रार्थना सभा के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। संचालन एडवोकेट राजेश फ्रांसिस ने किया।